सुमिरन के स्वर

सुमिरन के स्वर

શ્રીમદ્ રાજચંદ્ર આધ્યાત્મિક સાધના કેન્દ્ર-કોબા-૩૮૨૦૦૭.

प्रकाशक :

श्रीमद् राजचंद्र आध्यात्मिक साधना केन्द्र

(श्री सत्श्रुत सेवा साधना केन्द्र संचालित)

कोबा - 382 007. (जि. गाँधीनगर, गुजरात)

प्रथम आवृत्ति ● जुलाई, 2021 (गुरुपूर्णिमा)

प्रत : 1,000

प्राप्तिस्थान :

श्रीमद् राजचंद्र आध्यात्मिक साधना केन्द्र

कोबा - 382 007.

मो.: 79232 76219 / 483 / 484

E-mail : mail@shrimadkoba.org

Website : www.shrimadkoba.org

ऑडियो रिकॉर्डिंग :

जितिन-अमित, स्वर स्टूडियो, अहमदाबाद

मुद्रक : ड्रीम प्रिन्टर्स - साबरमती, अहमदाबाद

प्रकाशकीय

भारतीय आध्यात्मिक संगीत आत्मा की आवाज हैं । यथायोग्य सुर, ताल और वाद्ययन्त्रों के साथ मुक्त कण्ठ और उन्मुक्त विशुद्ध हृदय से परमात्मा के गुणों का संकीर्तन किया जाये तो आत्मा पर लगा हुआ किल्विष (पापमल) क्षणवार में विनष्ट होकर हृदय प्रदेश में परमाह्लाद स्वरूप परमात्मा प्रकाशित होता है, इसमें संदेह नही । इसी भाव का अपने हृदय में अनुभव करके श्रीमद् राजचन्द्र आध्यात्मिक साधना केन्द्र - कोबा के संस्थापक परम श्रद्धेय श्री आत्मानंदजी ने साधना केन्द्र की आराधना पद्धति में आध्यात्मिक भक्ति संगीत को विशिष्ट स्थान दिया है । वे स्वयं भी एक श्रेष्ठ भक्तिसंगीत के ज्ञाता और गायक थे । 'जैसे को मिले तैसा' इस कहावत के अनुसार उन्हें सहज ही कई अच्छे भजनीक संगीतज्ञ साधक अनुयायी भी मिले । इसी क्रम में पिछले लगभग बारह-पन्द्रह वर्षों से आपश्री के साथ भक्तिसंगीत में विशेष रुचि और कौशल्य

रखने वाले युवा बाल ब्रह्मचारी साधकों का समूह जुड़ा हुआ है। ये सभी अच्छे भक्त गायक है। इनमें से कुछ तो उत्कृष्ट रचनाकार भी हैं।

बहुत समय से अपने साधना केन्द्र से जुड़े हुए साधक-मुमुक्षुओं की भावना थी कि अपने साधकों द्वारा गाये हुए कुछ सुन्दर भाववाही भजनों की व्यवस्थित Audio Recording हो और उसमें प्रकीर्णक भजनों के साथ-साथ अपने साधना केन्द्र के साधकों श्री अल्का दीदी और श्री कपिल भैया द्वारा रचित रचनाएँ भी सम्मिलित हो। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये यह लगभग ७५ भजनों की Pen Drive साधकों के आत्मरंजनार्थ प्रस्तुत की जा रही है। जिसमें प्रभुभक्ति, गुरुभक्ति तथा आध्यात्मिक रस से सराबोर विशिष्ट भजनों, स्तवनों तथा संस्कृत के स्तोत्रों का समावेश किया गया है।

'सुमिरन के स्वर' नामक इस सुमधुर भजनांजलि में अपने भाववाही स्वर देने वाले कोबा त्यागीवृंद (ब्र.श्री

सुरेशजी, ब्र.श्री अलकादीदी, ब्र.श्री जनक दीदी, ब्र.श्री कपिलजी) तथा साधना केन्द्र से जुडे हुए सुस्वर के धनी अन्य युवा साधक श्री गिरीशभाई सोमपूरा, श्री गौरवभाई आचार्य, ब्र.श्री अंशुलभाई, श्री रुचिबेन डेलीवाला तथा श्री अंजलिबेन का संस्था आभार व्यक्त करती है, साथ ही अत्यंत प्रेम-परिश्रम के साथ सहयोग करने वाले 'स्वर रेकोर्डिंग स्टूडियो' (श्री जितिनभाई व श्री अमितभाई वैष्णव) को भी धन्यवाद ज्ञापित करते हैं । इस संगीतमय यज्ञ में धनरूपी आहुतियाँ देने वाले समस्त दानदाताओं का भी हृदय से आभार प्रदर्शित करते हैं ।

आशा है कि यह कृति आधि-व्याधि और उपाधि से पीड़ित जनसाधारण और विशेष कर आध्यात्मिक भक्त साधकों के आत्मा में शान्ति, प्रसन्नता और ठहराव लाने में सहायक हो और स्वरूप समाधि में प्रवेश करने में प्रकाश स्तंभरूप सिद्ध हो ।

विनीत : प्रकाशन समिति

अनुक्रमणिका

• प्रभु सुमिरन •

1. वीतरागी छवि 2
2. अंधारानो दिवडो 3
3. सांची प्रीत 4
4. त्रिशलानंदन वीर 5
5. मेरा मन तुझमें 6
6. आनंद स्वरूप 7
7. प्रेम समाधि 8
8. आओ आओ प्रभु 9
9. हे भगवान पार उतारो..10
10. प्रभु दर्शन बिन 11
11. मारा जीवन तणी 12
12. प्रभु एवी दया कर ... 13
13. शासनपति जिनराज. 14
14. सिद्धशीला पर 15
15. रम रहे तुम 16
16. मोंको तुम बिन 17
17. हो रे वीतरागी 18
18. प्रभु मेरा जीवन 19
19. भाव निर्मल 20
20. ऐसी मन में जगा दे . 21
21. प्रभु आरती 22

• स्तवन •

1. ऋषभ जिनराज 24
2. अभिनंदन जिन 26
3. घडी घडी सांभरे सांई . 27
4. विमल जिन दीठ 28
5. धार तरवारनी 29
6. हम मगन भये 30
7. नेमि जिनेसर 31
8. गिरुआ रे गुण 32

● सद्‌गुरु सुमिरन ●

1. गुरुदेव आपकी 34
2. मनमंदिर में 35
3. मारा गुणथी भरेला 36
4. संत चरण मन भावे .. 37
5. प्रगट हरि सम 38
6. उपकार अनंता 39
7. जो कुंदकुंद 40
8. भवजल नदिया 41
9. तुम्ही मात मेरे 42
10. सब चलो गुरु के 43
11. गुरु मिले हमको 44
12. संत चरण में नवाये.. 45
13. साहेब तेरे चरणों 46
14. मैं संतन को दास ... 47
15. जीवन में आनंद 48
16. खम्मा खम्मा 49
17. सूत्र गीत 50
18. जय सद्‌गुरु वंदन ... 51
19. आत्मानंद गौरवगाथा. 52
20. गुरुवंदना (Medley)
21. गुरुदेव तारा चरणमां. 60

● राज सुमिरन ●

1. हे युगपुरुष 62
2. कृपालु राजराजेश्वर ... 63
3. ज्ञानमूर्ति रायचंद...... 64
4. अहो परमकृपालु 65
5. कृपाळुनी वाणी 66
6. राजचंद्र तुम विशाल .. 67
7. चालिया पंथे 68
8. तमारी वचन सुधा 69
9. आत्मसिद्धिशास्त्र स्तुति 70
10. आरती 71

● आत्म सुमिरन ●

1. अहो ! सानंद आश्चर्यम् 73
2. चिदानंद में 75
3. नयणा भीतर 76
4. दो चार दिनों की 77
5. घनघोर विषय 78
6. सांवरे कब 79
7. शांत रहूँ मैं 80
8. रहो चेतन 81
9. सुधा सिंधु 82
10. अंतरयामी दरस 83
11. नजर न आवे 84
12. चेतन चालो 85
13. अपने को आप 86
14. मीठे-मीठे बोल 87
15. श्री समयसार कलश (155-160) भावानुवाद 88
16. भावना दिन-रात 90

● अष्टक (संस्कृत) ●

1. आचार्यश्री कुंदकुंद अष्टक 92
2. आचार्यश्री कनकनंदी अष्टक 95
3. आचार्यश्री सुनीलसागर अष्टक 97
4. श्री राजचंद्र अष्टक .. 100
5. श्री आत्मानंद अष्टक. 102

प्रभु सुमिरन

1. वीतरागी छवि

वीतरागी छवि प्रभु देख तेरी मन में है निराकुलता आई,
दुःख द्वन्द्व दुविधा सारी टली अद्भुत शांति है उर छाई
वीतरागी छवि प्रभु...

तेरे दर्श की अनुपम महिमा का जब तक ना सार समझ पाया,
तब तक विषयों का विष पीकर रागादिक दुःख अनंत सहा,
परिचय पाकर तेरे वैभव का निज वैभव की महिमा आई,
दुःख द्वन्द्व दुविधा...

हे सहजशुद्ध आनदरूप त्रैलोक्यतिलक सिद्धेश प्रभु !
निर्दोष निरामय निष्कलंक शुद्धात्म ज्ञान पूर्णेश विभु,
अब पाके शरण तेरे चरणों की उर से व्याकुलता सहज टली
दुःख द्वन्द्व दुविधा...

एक अरज यही प्रभु चरणों में शरणागत का ये मान रहे,
जब तक न शाश्वत निधि पाऊँ उर में तेरा ही ध्यान रहे,
अक्षय अविनाशी सुख पाने, तव चरण शरण में आन पड़ी
दुःख द्वन्द्व दुविधा...
वीतरागी छवि प्रभु...

2. अंधारानो दिवडो

अंधारानो दिवडो ने, तू मनडानो मोर,
तारी साथे प्रीतड़ी, जेम चंदा ने चकोर (२)

क्षत्रियकुंडनो स्वामी तुं छे, सिद्धारथ शणगार,
त्रीसज वर्षनी युवावयमां, तजी दीधो संसार;
नटडो हुं संसारनो पण, नाचवुं तारे डोर ।

करुणानो तुं सागर मोटो, तार्या कंइक प्राणी,
दावानळ के वडवानळ हो, शांत करे तुज वाणी;
तुं छे जगनो लाडकडोने, तारी प्रीति अजोड ।

आज सुधी आ जीवन मारुं, अवळा पंथे वहेतुं,
धन्य घडी आ चित्तडुं मारुं, तारा शरणे रहेतुं;
त्रण भुवननो स्वामी तुं छे, ठकुर चित्तनो चोर ।
तारी साथे...

3. साँची प्रीत

साँची प्रीत करो मन मेरे, साँची प्रीत करो मन मेरे
हरि चरणों में चित्त को लगाई, प्रभु चरणों में चित्त को लगाई,
साँची प्रीत करो मन मेरे...

प्रभु पद प्रीत हरे अघ तेरे, जनम जनम के पाप घनेरे,
मिटे सब मिथ्या मोह अंधेरे, टले सब जनम मरण भय फेरे,
साँची प्रीत करो मन मेरे...

निर्मल तन मन निर्मल जीवन निर्मल अंतर आतम बने जब,
तब ही आवे अंतरयामी, उर में प्रगटे निजानंद स्वामी,
साँची प्रीत करो मन मेरे...

तज मद मत्सर मान अरु माया, झूठी ममता आस विसारी,
भाव भगतियुत प्रीत धरो उर, प्रभु पद पंकज भव भय हारी,
साँची प्रीत करो मन मेरे...

4. त्रिशलानंदन वीर

त्रिशलानंदन वीर हो... मनमंदिर बस जाना

मनमंदिर बस जाना भगवन् मनमंदिर बस जाना हो...

त्रिशलानंदन वीर हो..., शासनपति महावीर हो...

तुम दर्शन बिन भवसागर में, भटका काल अपार हो...

मनमंदिर बस जाना

भई मगनता तुम गुण रस की, आतम गुण भंडार हो...

मनमंदिर बस जाना

दीनदयाल अनाथपति तुम, करुणा रस आगार हो...

मनमंदिर बस जाना

नाम ही तुमरा ताप हरत है, वीर वीर जयकार हो...

मनमंदिर बस जाना

तुम सम जग में मेरो न कोई, आतम के आधार हो...

मनमंदिर बस जाना

तुम पद मेरे उर बसों जी, विनती आठों याम हो...

मनमंदिर बस जाना

शरणागत को पार लगाओ, आवागमन निवार हो...

मनमंदिर बस जाना

5. मेरा मन तुझमें

मेरा मन तुझ में रम जाये, बस इतनी कृपा कीजै ।
मेरा राग हटा देना, मेरे दोष मिटा देना,
मेरी प्रीत जगा देना, मेरा मोह मिटा देना;
मुझे बस अपना लीजै, चरणोमें जगह दीजै ।

संसार नहीं अपना, परिवार नहीं अपना,
यह तन भी नहीं अपना, सब सपना ही सपना;
मेरी बाँह पकड़ लीजै, संताप मिटा दीजै ।

सुख में ना तुझे भुलूँ, दुःखमें भी ना घबराऊँ,
दिनरात तुझे ध्याऊँ, तेरी भक्ति पा जाऊँ;
सत्संग की गंगा में, मुझे स्नान करा दीजै ।

मेरा मन तेरा मंदिर हो, सासों में तेरा सूर हो,
तेरा नाम ज़ुबाँ पर हो, चरणों में झूका सिर हो;
मेरी जीवन नैया को, प्रभु पार लगा दीजै ।

6. आनंद स्वरूप

आनंद स्वरूप हो तुम अतिशांत सुधारस पूर्ण
मेरा मन शुद्ध करो (२)
बिखरा हुआ जीवन है भटका हुआ ये मन है,
तन मन और जीवन पर कर्मों का बंधन है,
पतितों के उद्धारक तुम, सब गुणों के धारक तुम,
दुखों को दूर करो... मेरा मन...
जग को अपना समझा मिथ्या को सच माना,
भोगों में रच-पच कर नर भव को न पहचाना
शुद्ध ज्ञानस्वरूप हो तुम निज ज्ञान की देकर बूंद,
मुझे तुम बुद्ध करो... मेरा मन...
नहीं चाह रहे जग की, नहीं आस रहे कुछ भी,
मेरे अंतर मन में बस प्यास रहे रब की,
विषयों के अंधेरों से, भव-भव के फेरों से,
प्रभु अब मुक्त करो... मेरा मन...
मैं तुझमें रम जाऊँ, तेरे ही गुण गाऊँ,
चरणों की शरण पाकर बस एक स्वरूप ध्याऊँ,
निज आतम को ध्याऊँ शाश्वत आनंद पाऊँ,
ये भावन पूर्ण करो... मेरा मन...

7. प्रेम समाधि

प्रेम समाधि पाऊँ, प्रभु चरण में लगन लगाऊँ
रूप तुम्हारा निशदिन ध्याकर, स्वरूप समाधि पाऊँ
अंतर ज्योत जलाऊँ

तू ही तू ही उर में रटन लगाकर
ध्यान अखंडित ध्याऊँ
तुझ और मुझ का भेद मिटाकर,
एक स्वरूप समाऊँ
सत् चित् आनंद पाऊँ... अंतर ज्योत जलाऊँ

सेवा सुमिरन चिंतन में रत
पल पल प्रीत बढ़ाऊँ
तुमरी ज्योत से ज्योत जलाकर
आनंदघन नित ध्याऊँ
निज का रूप निहारूँ अंतर ज्योत जलाऊँ

8. आओ आओ प्रभु

तेरी राहों से कांटों को चुन चुन हटाया

आओ आओ प्रभु अंतर अंगना सजाया..

निर्मल नीर सा पावन तन मन किया,

मोह माया का दामन मल मल धोया,

अश्रुधारा के सिंचन से उपवन खिलाया. आओ आओ०

कभी मन को सताया कभी तन को तपाया,

तुझको पाने का साधन समझ न आया,

अब तो चरणों में जीवन का अर्घ्य चढाया.आओ आओ०

देखा सदियों से स्वप्न वो टूटने लगा,

बीता बचपन ये यौवन भी ढलने लगा,

तेरे मिलन के गीतों को विरहा ने गाया. आओ आओ०

अब जो नैनों ने तेरा दरश न पाया,

मानो विरथा प्रभु मैंने नर तन गँवाया,

अपनी अरजी की अरजो में ये ही सुनाया.आओ आओ०

9. हे भगवान पार उतारो

हे भगवान पार उतारो, पार उतारो (२)
भवसागरमां हुं अथडायो प्रभु वेगे पार उतारो । (२)

अधम उधारण नाम तमारुं, घड़ी घड़ी भावे हुं तो तमने पोकारुं,
जनमो जनमथी पंथ निहारुं, बोलो कई रीते हवे तमने रीझावुं ।

नैया मारी मे तो भरोसे छोड़ी, सुकानी तुं एवो जेनी मळ्ती न जोड़ी,
दुनयवी वातोनो गरव छोड़ी, तारे शरणे हूं आव्यो बे कर जोड़ी ।

रोमे रोमे एक तारुं नाम समायुं, चरण-युगल मां मारूं चितडुं चोरायुं,
तनडु रुंधायुं मारूं मनडु रुंधायुं, विरहना तीरे मारूं हृदय वींधायुं ।

चरण पड्यो छुं दुःखड़ा कापो, वांक निवारी मने सुखड़ा आपो,
रगे रगे स्वामी तव प्रेम ज व्यापो, "आत्मानंद" मारे हृदये स्थापो ।

10. प्रभु दर्शन बिन

प्रभु दर्शन बिन सब जग सूना, प्रभु दर्शन बिन सूना,
हरि दर्शन बिन सब जग सूना, हरि दर्शन बिन सूना
प्रभु दर्शन...

प्रभु प्रभु लय रहे इस जीवन में और ना कोई आशा,
तुम जो छोड़ो साथ अगर मेरा, मैं ना तोडूं नाता,
ना कुछ चाहूँ तुमसे प्रीतम, याद रहे दिन रैना
प्रभु दर्शन...

तेरा ध्यान ही रहे निरंतर, राग द्वेष मिट जाये,
तुझ और मुझ में भेद रहे नहीं, निज ही निज में समाये,
पल-पल छीन-छीन तुझे पुकारूँ, तुझ बिन चैन कही ना
प्रभु दर्शन...

शांत छवि मनोहारी ऐसी, जन-जन दरस को तरसे,
अंतर आनंद बाहिर आनंद, परमानन्द रस बरसे,
पाय दरस तव निशदिन निरखूँ, हे प्रभु आतमलीना
प्रभु दर्शन...

11. मारा जीवन तणी

मारा जीवन तणी शुद्ध शेरीए, प्रभु आवोने;
हुं तो जोउं वालमनी वाट, मारा घरे आवोने ।
आ चंदनना चित्त चौकमां, प्रभु आवोने;
मारा आतम सरोवर घाट, मारा घरे आवोने ।
में तो छोडी स्वच्छंदता माहरी, प्रभु आवोने;
तारे चरणे धर्युं मारुं दिल, मारा घरे आवोने ।
में ज्योत जगावी छे प्रेमनी, प्रभु आवोने;
में तो वेर्या आनंदना फूल, मारा घरे आवोने ।
मने व्यापी विरह तणी वेदना, प्रभु आवोने;
माराथी खमी न खमाय, मारा घरे आवोने ।
जेम जळ विण तरफड़े माछली, प्रभु आवोने;
हरि एवा छे मारा हवाल, मारा घरे आवोने ।
मारी रडी रडी आंख थई रातड़ी, प्रभु आवोने;
रोमे रोमे व्याप्यो उन्माद, मारा घरे आवोने ।
हे प्रेम निधि प्रेम प्रगटाववा, प्रभु आवोने;
मने पावन करो धरी पाय, मारा घरे आवोने ।

तमे मारा नयनना तारला, प्रभु आवोने;
मारा हैयाना अमुलख हार, मारा घरे आवोने ।
मारा त्रिविध तापने टाळवा, प्रभु आवोने;
'संतशिष्य' तणा शणगार, मारा घरे आवोने ।

12. प्रभु एवी दया कर

प्रभु ! अेवी दया कर तुं, विषय ने वासना छुटे;
त्रिधा तापो सहित माया, जराये ना मने लूंटे ।

पराया दोष जोवानी न थाओ वृत्ति के इच्छा;
सूतां के जागतां मनमां, मलिन विचार न उठे ।

रहे नहि वस्तुनी ममता, बधामां हो सदा समता;
रहे नहि दंभ दिलडामां, त्रिगुणनी शृंखला तूटे ।

सदाये भावना तारी, निरंतर भान हो तारुं;
रहुं एकतार तारामां, नहि बीजुं स्फुरण फूटे ।

वृत्तिने इन्द्रियो मारी, रहो तल्लीन तारामां,
प्रभु वल्लभ रही शरणे, अलौकिक भक्तिरस लूंटे ।

13. शासनपति जिनराज

शासनपति जिनराज अरजी सुन लीजो...

कीजो भवोदधि पार तारण-तरण जिहाज,
विनती सुन लीजो, शासनपति जिनराज...

सर्व सहायी शासन तिहारो,
अशर्ण अत्राही जीवन हमारो,
जगपति जगदीश स्वामी त्रिभुवन अंतरयामी,
शरणे धर लीजो, शासनपति जिनराज...

अद्भुत जग में रीत चलाई,
रंक अरु राजा सबको तिराई,
शरणागत मैं तुम्हारो, निजपद विरुद निहारो,
करुणा कर दीजो, शासनपति जिनराज...

अति दुःखदायी कलिकाल आयो,
राग-द्वेष रंग चहुँदिश छायो
शूल में सुमन समाना, जिनवर शासन तुम्हारा,
आश्रय दे दीजो, शासनपति जिनराज...

14. सिद्ध शीला पर

सिद्ध शीला पर तमे विराजो ने हुँ धरती ऊपर,
मारी तमारी वच्चे लाखों जोजन केरु अंतर ।

क्षण-क्षणे तमे जाग्रत रहीने अनुपम साधना कीधी,
निद्राने प्रमाद मही में घोर विराधना कीधी
पेले पार तमे पहुँच्या ने हुँ हजु काठा ऊपर,
मारी तमारी...

हैये तमारे सत्य अहिंसा प्रेम करुणा प्रगटे,
असत्य हिंसा वेरझेरमां, जीवन मारुं सळगे,
शांति समाधि लागी तमने मारे भड़का भीतर,
मारी तमारी...

ऊँचे ऊँचे तमे चढ्या हुँ नीचे-नीचे पडतो,
मुक्तिपदने पाम्या तमे हुँ लक्ष चोरासी भमतो,
केम करी आ अन्तर तूटे एज विचार निरंतर,
मारी तमारी...

15. रम रहे तुम

रम रहे तुम नित निज आनंद में,
पल भर आवो प्रभु मोरे चित्तवन में
प्रभु मोरी अरजी स्वीकारो, पलभर नज़रे निहारो...

जग सुख स्वाद की चाह नहीं है
भोग विलास की आस नहीं है
प्यास दरस की बुझाओ... पलभर नज़रे निहारो...

सत् चित् आनंदमय परमातम
अजर अमर अविनाशी महातम,
सहजानंद दरसाओ... पलभर नज़रे निहारो...

शरण तिहारे जोई जन आएँ
जनम मरणदुःख भव भय टारे,
अब मोरी लाज निभाओ... पलभर नज़रे निहारो...
रम रहे...

16. मोंको तुम बिन

मोंको तुम बिन भववन माहीं और शरण नहीं स्वामी,
हाथ गही अब पार उतारो डूबत जात हूँ भवजल मांही.
मोंको तुम बिन...

धन तन कंचन कीरत नारी, चार दिवस की संपत सारी,
कर्म जोग तै सब है पाई, कर्म नाशतै सब बिछुराई.
मोंको तुम बिन...

काल अनंत से जनम गँवाएँ, काम भोग के साधन पाएँ,
तामै तृष्णा लोभ लुभाई, अंत समय सब रे दुखदायी.
मोंको तुम बिन...

सुर नर किन्नर नृप अरु चक्री, कालपाश के सब है बंदी,
मृत्यु पिशाचिनी किसकी दासी, नाथ अनाथ के इक तुम स्वामी.
मोंको तुम बिन...

17. हो रे वीतरागी

हो रे वीतरागी ! प्रभु मोरा त्यागी
तुझ चरणन लय लागी,
भयी मैं तो तोरी अनुरागी

प्रशम नयन मुख मण्डल अदभुत,
हृदय सरोवर समता रस युत,
कर युगपद थिरकारी, भयी मैं तो तोरी अनुरागी

सुरनरपति तुझ चरणन ध्यावत,
त्रिभुवन तुझ महिमा नित गावत,
तदपि रहत वीतरागी, भयी मैं तो तोरी अनुरागी

दाता नहीं कोई तुझ सम नामी,
हाथ पसारी कोई अवर क्यों जाई,
सुरतरु समीप रहाई, भयी मैं तो तोरी अनुरागी

18. प्रभु मेरा जीवन

प्रभु मेरा जीवन शरण तुम्हारे,
तन मन अर्पण चरण तुम्हारे, प्रभु मेरा जीवन...
सुख की चाह में सब जग छाना,
अंश ना पाया हुआ हृदय वीराना,
आन पड़ा अब तेरे द्वारे,
दरस को तरसे नैन हमारे, प्रभु मेरा जीवन...
मोह राग रुष वश संसारा,
प्रेम योग्य बस तुमको पाया,
भक्ति अचल मोहबंध जलाये,
सब सुख आनंद तुझमे समाये... प्रभु मेरा जीवन...
नर-भव दुर्लभ धरम है पाया,
गुरु आश्रय बोधामृत पाया,
स्वर्णिम अवसर तुमने दिया रे,
अंतर आनंद ज्योत जगाये... प्रभु मेरा जीवन...

19. भाव निर्मल

भाव निर्मल कर हृदय से जिन-चरण की वंदना,
जिन-चरण में अनन्त आनंद का समंदर बह रहा ।
पतित पावन पुनीत पूर्णित प्रेम पूरित जिन -चरण,
शुद्ध सात्विक शांत सार्थक सिद्धि साधक जिन-चरण,
जिन-चरण का प्रवाह निर्मल जगत निर्मल कर रहा ।
भाव निर्मल...

मोह ज्वाला में ज्वलित संताप तापित भविक जन,
व्यग्र व्याकुल नित्य आकुल चित्त विचलित दुखित मन,
जिन-चरण का प्रशांत रस सबको प्रशांति दे रहा ।
भाव निर्मल...

विश्ववंदित, पूज्यपूजित, सर्वअर्चित जिन-चरण,
कर्मघातक, दुरितनाशक, भवविनाशक जिन-चरण,
जिन-चरण का माहात्म्य मंगल सर्व मंगल कर रहा ।
भाव निर्मल...

20. ऐसी मन में जगा दे

ऐसी मन में जगा दे विरक्ति, तेरे पथ से कभी पग डिगे ना,
बढ़ते जाए कदम आत्मबल से चल-विचल तेरी राहों से होना
ऐसी...

पाप के फल की ना हो उपेक्षा पुण्य के फल की ना हो अपेक्षा
जागतिक जागे मन में दुरिच्छा पूर्व कर्मों का बल ले परीक्षा
इस मनुज तन का अनमोल इक क्षण तुच्छ तृष्णाओं में व्यर्थ हो ना
ऐसी...

पर विकल्पों की जब जब हो उलझन आत्मचिंतन बढ़े तब प्रतिक्षण
राह में आये जब जब प्रलोभन सद्गुरु के वचन का हो मंथन
जागते स्वप्न में या शयन में लक्ष्य से च्युत कोई कृत्य हो ना
ऐसी...

तुझको अर्पण हो मेरा ये जीवन हो सजा त्याग वैराग्य संयम
हे प्रभु ! आएँ जब आखरी क्षण राग रुष का ना हो कोई बंधन
हो क्षमाभाव चित्त में प्रशांति पूर्ण समता में मेरा मरण हो
ऐसी...

21. प्रभु आरती

जय जय अविकारी स्वामी जय अविकारी,
हितकारी भयहारी, शाश्वत स्वविहारी, जय जय अविकारी।
काम क्रोध मद लोभ न माया, समरस सुखधारी,
ध्यान तुम्हारा पावन, सकल कलेशहारी ।
ॐ जय जय अविकारी..१

हे स्वभावमय जिन तुम चीना, भवसंतति टारी,
तुव भूलत भव भटकत, सहत विपत भारी ।
ॐ जय जय अविकारी..२

पर संबंध बंध दुःखकारण, करत अहित भारी,
परम ब्रह्म का दर्शन, चहूंगति दुःखहारी ।
ॐ जय जय अविकारी..३

ज्ञानमूर्ति हे सत्य सनातन, मुनिमन संचारी,
निर्विकल्प शिवनायक, शुचिगुण भंडारी ।
ॐ जय जय अविकारी..४

बसो बसो हे सहज ज्ञानघन, सहज शांतिचारी,
टलैं टलैं सब पातक, परबल बलधारी ।
ॐ जय जय अविकारी..५

स्तवन

1. ऋषभ जिनराज

ऋषभ जिनराज मुझ आज दिन अति भलो,

गुणनीलो जेणे तुं नयण दीठो;

दुःख टळ्यां सुख मिल्यां, स्वामी ! तुं नीरखतां,

सुकृत संचय हुवो, पाप नीठो ।

कोडी छे दास विभु ! ताहरे भलभला,

माहरे देव तुं एक प्यारो;

पतितपावन समो जगत उद्धारकर,

महिर करी मोहि भवजलधि तारो ।

मुक्तिथी अधिक तुझ भक्ति मुझ मन वसी,

जेहशुं सबळ प्रतिबंध लाग्यो;

चमकपाषाण जिम लोहने खेंचशे,

मुक्तिने सहज तुझ भक्तिरागो ।

धन्य ते काय, जेणि पाय तुझ प्रणमीए,
तुझ थुण्ये जेह धन्य ! धन्य ! जीहा;
धन्य ! ते हृदय जिणे तुज सदा समरीऐ,
धन्य ते रात ने धन्य ! दिहा ।

गुण अनंता सदा तुझ खजाने भर्या,
एक गुण देत मुझ शुं विमासो ?
रयण एक देत शी हाण रयणायरे ?
लोकनी आपदा जेणे नासो ।

गंग सम रंग तुझ कीर्ति कल्लोलने,
रवि थकी अधिक तप-तेज ताजो;
नयविजय विबुध सेवक हुं आपरो,
जश कहे अब मोहि भव निवाजो ।

2. अभिनंदन जिन

अभिनंदनजिन ! दरिशण तरसीए, दरिशण दुर्लभ देव;
मत मत भेदे रे जो जई पूछीए, सहु थापे अहमेव ।

सामान्ये करी दरिशण दोहिलुं, निर्णय सकल विशेष;
मदमें घेर्यो रे अंधो किम करे, रविशशिरूप विलेख ।

हेतु विवादे हो चित्त धरी जोईए, अति दुर्गम नयवाद;
आगमवादे हो गुरुगम को नहीं, अे सबलो विषवाद ।

घाती डुंगर आडा अति घणा, तुझ दरिशण जगनाथ;
धीठइ करी मारग संचरुं, सेंगू कोई न साथ ।

दरिशण दरिशण रटतो जो फरुं, तो रणरोझ समान;
जेहने पिपासा हो अमृतपाननी, किम भांजे विषपान ।

तरस न आवे हो मरणजीवन तणो, सीझे जो दरिशण काज;
दरिशण दुर्लभ सुलभ कृपा थकी, आनंदघन महाराज ।

3. घडी घडी सांभरे सांई

घडी घडी सांभरे सांई सलूना...

पद्मप्रभ जिन दिलसें न वीसरे, मानुं कियो कछु गुनको दूना;
दरिसन देखत ही सुख पाउं, तो बिनुं होत हुं उना दूना ।

प्रभु गुन ज्ञान ध्यान विधि रचना, पान सुपारी काथा चूना;
राग भयो दिल में आयोगे, रहे छिपाया ना छाना छूना ।

प्रभुगुण चित्त बांध्यो सब साखे, कुन पइसे लेइ घरका खूना;
राग जग्यो प्रभुशुं मोहि प्रगट, कहो नया कोउ कहो जूना ।

लोकलाजसें जे चित्त चोरे, सो तो सहज विवेक हि सूना;
प्रभुगुण ध्यान वगर भ्रम भूल्या, करे क्रिया सो राने रूना ।

में तो नेह कियो तोही साथे, अब निवाह तो तो थेई हूना;
जश कहे तो विनुं और न सेवुं, अमिय खाइ कुन चाखे लूना।

4. विमल जिन दीठा

दुःख दोहग दूरे टळ्यां रे, सुख संपदशुं भेट,
धिंग धणी माथे किया रे, कुण गंजे नर खेट;
विमल जिन, दीठां लोयण आज, मारां सींध्यां वांछित काज.
चरण-कमल कमला वसे रे, निर्मल थिर पद देख;
समल अथिर पद परहरी रे, पंकज पामर पेख...
मुझ मन तुझ पदपंकजे रे, लीनो गुण मकरंद;
रंक गणे मंदीरधरा रे, इंद चंद नागिंद...
साहिब समरथ तुं धणी रे, पाम्यो परम उदार;
मन-विशरामी वालहो रे, आतमचो आधार...
दरिशण दीठे जिनतणुं रे, संशय न रहे वेध;
दिनकर करभर पसरंतां रे, अंधकार प्रतिषेध...
अमियभरी मूरति रची रे, उपमा न घटे कोय;
शांत सुधारस झीलती रे, निरखत तृप्ति न होय...
एक अरज सेवक तणी रे, अवधारो जिनदेव;
कृपा करी मुझ दीजिए रे, आनंदघन पद सेव...

5. धार तरवारनी

धार तरवारनी सोहली दोहली, चौदमा जिनतणी चरण सेवा;
धार पर नाचता देख बाजीगरा, सेवना-धार पर न रहे देवा ।

एक कहे सेवीए विविध किरिया करी, फल अनेकांत लोचन न देखे;
फल अनेकांत किरिया करी बापडां, रड़वड़े चार गतिमांहि लेखे ।

गच्छना भेद बहु नयण निहाळतां, तत्त्वनी वात करतां न लाजे;
उदरभरणादि निज काज करतां थकां, मोह नडिया कलिकाल राजे ।

वचन निरपेक्ष व्यवहार झूठे कह्यो, वचन सापेक्ष व्यवहार साचो;
वचन निरपेक्ष व्यवहार संसार फल, सांभळी आदरी कांइ राचो ।

देव गुरु धर्मनी शुद्धि कहो किम रहे ? किम रहे शुद्ध श्रद्धान आणो;
शुद्ध श्रद्धान विणु सर्व किरिया करी, छार पर लींपणुं तेह जाणो ।

पाप नहीं कोई उत्सूत्र भाषण जिस्यो, धर्म नही कोई जगसूत्र सरिखो;
सूत्र अनुसार जे भविक किरिया करे, तेहनुं शुद्ध चारित्र परिखो ।

एह उपदेशनो सार संक्षेपथी, जे नरा चित्तमें नित्य ध्यावे;
ते नरा दिव्य बहु काळ सुख अनुभवी, नियत आनंदघन राज पावे ।

6. हम मगन भये

हम मगन भये प्रभु ध्यान में,
विसर गई दुविधा तन मन की, अचिरासुत गुण गानमें ।

हरि हर ब्रह्म पुरंदरकी रिद्ध, आवत नहि कोउ मान में;
चिदानंद की मोज मची है, समता रस के पान में ।

इतने दिन तु नाहि पिछान्यो, मेरो जन्म गमायो अजानमें;
अब तो अधिकारी होई बेठे, प्रभु गुण अखय खजान में ।

गई दीनता सब ही हमारी, प्रभु ! तुझ समकित दान में;
प्रभु गुण अनुभव के रस आगे, आवत नहि कोउ मान में ।

जिनही पाया तिनही छिपाया, न कहे कोउ के कान में;
ताली लागी जब अनुभव की, तब जाने कोउ सान में ।

प्रभुगुण अनुभव चंद्रहास ज्यों, सो तो न रहे म्यान में;
वाचक यश कहे मोह महा अरि, जीत लियो है मैदान में ।

7. नेमि जिणेसर

नेमि जिणेसर निज कारज कर्युं, छांड्यो सर्व विभावोजी;
आतमशक्ति सकल प्रगट करी, आस्वाद्यो निज भावोजी ।

राजुल नारी रे सारी मति धरी, अवलंब्या अरिहंतोजी;
उत्तम संगे रे उत्तमता वधे, सधे आनंद अनंतोजी ।

धर्म अधर्म आकाश अचेतना, ते विजाती अग्राह्योजी;
पुद्‌गल ग्रहवे रे कर्म कलंकता, वाधे बाधक बाह्योजी ।

रागी संगे रे राग दशा वधे, थाये तिणे संसारोजी;
निरागीथी रे रागनुं जोडवुं, लहीए भवनो पारोजी ।

अप्रशस्तता रे टाळी प्रशस्तता, करतां आस्रव नासेजी;
संवर वाधे रे निर्जरा, आतमभाव प्रकाशेजी ।

नेमि प्रभु ध्याने रे एकत्वता, निज तत्वे एकतानोजी;
शुक्लध्याने रे साधी सुसिद्धता, लहिये मुक्ति निदानोजी ।

अगम अरूपी रे अलख अगोचरु, परमातम परमीशोजी;
देवचंद्र जिनवरनी सेवना, करतां वाधे जगीशोजी ।

8. गिरुआ रे गुण

गिरुआ रे गुण तुम तणा, श्री वर्धमान जिनराया रे;
सुणतां श्रवणे अमी झरे, मारी निर्मल थाये काया रे ।

तुम गुणगण गंगाजले, हुं झीलीने निर्मळ थाउं रे,
अवर न धंधो आदरुं, निशदिन तोरा गुण गाउं रे ।

झील्या जे गंगाजले, ते छिल्लर जल नवि पेसे रे;
जे मालती फुले मोहीआ, ते बावळ जइ नवि बेसे रे ।

एम अमे तुम गुण गोठ्शुं, रंगे राच्या ने वळी माच्या रे,
ते केम परसुर आदरुं, जे परनारी वश राच्या रे ।

तुं गति तुं मति आशरो, तुं आलंबन मुझ प्यारो रे;
वाचक यश कहे माहरे, तुं जीव-जीवन आधारो रे ।

सद्गुरु सुमिरन

1. गुरुदेव आपकी

गुरुदेव आपकी नज़रों से निज को निहारा है,
बिखरा हुआ था सदियों से जीवन उसको संवारा है ।

मैं कौन हूँ और आया कहाँ से जाना कहाँ ये न बोध था,
निज आत्मा की गहराईयों का किया हमने कोई न शोध था,
धुंधला सा मेरा धर्माचरण था, उसको निखारा है ।

जिसे ढूँढते हम बाहिर भटककर वो तुमने ही भीतर में दिखलाया,
मनोरथ लिये दौड़े मन के जो घोड़े वो तुमने ही पल भर में ठहराया,
सहज जीवन से सद्गुण का सौरभ जगत में बिखेरा है ।

क्या भेंट दूं मैं उनके चरण में जिनको जगत की न आस है,
तन मन आतम करूँ सर्व अर्पण ये जीवन तुम्हारा दास है,
परम पंथ पर बढ़ते हर जीवन को, तुम्हारा सहारा है ।

2. मनमंदिर में

मनमंदिर में गुरु सुमिरन हो अविरल आठों याम,
प्राणपति ओ नाथ हृदयवर तुमको कोटि प्रणाम ।
जय गुरुदेव जय गुरुदेव...

दुनिया के आकर्षण सारे तुम आगे सब फीके,
नज़र जहाँ पर जाए जग में तुम बिन और न दीसे,
अनहद प्रीत लगी चरणन में ओ मेरे प्रियधाम,
प्राणपति...

व्यथित निराश हृदय हो जब जब हाथ तेरा सहलाये,
राह में आये उलझन जब जब साथ तेरा सुलझाये,
हे करुणा के सागर साहेब आशीष दो अविराम,
प्राणपति...

जनम जनम के पुण्य जगे तो सद्गुरु शरण सुहाया,
दुर्लभतम जीवन का पल वो गुरु दर्शन जो पाया,
आन विराजो हृदयकमल में ओ शबरी के राम,
प्राणपति...

3. मारा गुणथी भरेला

म्हारा गुणथी भरेला गुरुदेव, चरण तारा सेव्या करुं;
तारा गुणनो आवे नहीं पार, अहोनिश गाया करुं.
तारुं हैयु प्रभुना प्रेमे भर्युं,
तारी आंखोमां अमीरस झरणुं वह्युं,
तारी मूरत शांत प्रशांत, शीश नमाव्या करुं.
तारी वाणी अनंता आगम भरी,
तारी दृष्टि सौ प्राणीमां समता धरी,
तारुं ज्ञान छे परम प्रकाश, जीवन दीपाव्या करुं.
तारुं जीवन निर्मळ नीर समुं,
तारुं वर्तन पावन धर्म समुं,
तारुं दर्शन करे भवपार, पल-पल पाम्या करुं.

धून

गुणगुणथी भरेला, सद्गुणथी सजेला
गुरुदेव अमारा, गुरुदेव अमारा,
तुझ पर बलिहारी जावुं,
जीवन प्राण में वारुं, गुरुदेव अमारा (२)

4. संत चरण मन भावै

संत चरण मन भावै रे सुहावै
प्रेम जग से छुडावै, प्रभु लगनी लगावै, प्रीत पावन रे
संत चरण...

जुग जुग तै भवजल माहि डूबे आवत ना कोऊ पार हो
भक्तजनों को पार करन को चरणन पोत समान हो,
काज अधूरा तब तक जब तक, संत कृपा न हो माथ रे
जनमो जनम के दुरित नसावै, प्रेम जग से...

स्वारथ पल पल गलत जाय अरु परहित उर मां समाये रे
तृष्णा पल पल घटत जाय अरु छूटे मायिक आस रे
हिय नयनन को कर दे निर्मल, गुरुजन का संगाथ रे
शांति समाधि चित्त आवै रे स्वभावै, प्रेम जग से...

ऐसे विरले संत चरण को कर अविरत आराध हो
जीवन बदली जाय सहज ही पावे प्रेम प्रसाद हो
प्रेम प्रसाद तै करम नसावै, पावै मुक्तिधाम हो
मुक्तिनगर अनहद सुख आपे, प्रेम जग से...

5. प्रगट हरि सम

प्रगट हरि सम संत जगत में सेवा चरण की कीजै,
सेवा चरण की कीजै निशिदिन आनंद अमृत पीजै.
जय गुरुदेव, जय गुरुदेव, जय गुरुदेव

संत परम हितकारी सहायी भव भय ताप विदारी,
स्वरूप विचारी गुण पहचानी चरणन लिपट रहीजै
आनंद अमृत पीजै...

संत वचन सुखदाई कृपारस उर में नित्य धरीजै,
निर्मल चित्त में पुनि पुनि धारी सहज समाधि लीजै
आनंद अमृत पीजै...

संत स्वरूप अतिगहन गंभीरा पहचाने सो पावै तीरा,
तज निज छंद को मिथ्या प्रपंच को नित्य समर्पण कीजै
आनंद अमृत पीजै...
प्रगट हरि सम...

6. उपकार अनंता

उपकार अनंता कीधा अणमोला रतन गुरु दीधा,
उपकार तमारा गुरुजी संभार्या विना समराय मने (२)

उपकार...

हुं भूली भवनी अटवीमां अने काळ अनादि रझड़ी रही,
झूठी देहनी ममता मूर्छामां मारा आतम देवने विसरी रही,
आवो भ्रम अमारो गुरुजी गुरुगम विना भेदाय नहीं ।

उपकार तमारा...

हुं पंथ मतोनी मायामां कुळधर्मनी किरिया करती रही,
निजमतना जप-तप साधनमां अभिमान निरंतर सेवी रही,
अवगुण अमारा गुरुजी तारा दर्श विना दर्शाय नहीं ।

उपकार तमारा...

बहु पुण्य उदयना अवसरथी आश्रय हुं तमारो पामी रही,
तारी प्रेम करुणा किरपाथी सद्धर्मनो मर्म हुं समझी रही,
आधारे तमारा गुरुजी निराधार कोई कहेवाय नहीं ।

उपकार तमारा...

7. जो कुंदकुंद

जो कुंदकुंद ऋषिवर की महिमा को गावे,
परमति भागे निजमति जागे स्वपर विवेक लखावें ।

सुख दुख दोनों समकरी जाने करमन की गति भाखे,
समता भाव सदा चित्त राखे मान अपमान न ध्यावे ।
जो कुंद कुंद...

आत्म समान लखे जगवासी ज्ञान विराग बढ़ावै,
हंसकलावत् रहत जगत में अंतर ज्योति जगावें ।
जो कुंद कुंद...

दास बनी नित सेवु चरण वे जो कुंद कुंद वचन सुनावे,
ऐसे महातम को शिर नाऊँ जो सद्गुरू महिमा बढ़ावै ।
जो कुंद कुंद...

8. भवजल नदिया

भवजल नदिया के दो तट है, एक पर तुम दूजे पर हम है,
तुम पार हुए जा बैठे हो, हम पार होने बैठे है,
इस अंतर को गुरु दूर करो (२)

मैं निज वैभव को भूल गया, जग जंजालों में झूल गया,
अगणित गोते खाए फिर भी केवल लहरों में झूल रहा,
इस अंतर को गुरु दूर करो...

इस पार द्वंद्व है व्याकुलता, उस पार है शान्ति निराकुलता,
उत्तम अनुपम सुख चाहूँ पर चहूँ ओर मिले है आकुलता,
इस अंतर को गुरु दूर करो...

मैं तव चरणों का अभिलाषी, तुम भरम करम सब मल नाशी,
मै तलहटियों में भटक रहा, तुम जाये विराजे कैलाशी,
इस अंतर को गुरु दूर करो...

यह विरह कहाँ तक सहना है, कब तक कर्मों को ढोना है,
युग-युग से यूँ चलता आया, कब तक जीना और मरना है,
इस अंतर को गुरु दूर करो...

कैसे पाऊँ दर्शन तेरे, यह नैना आतुर है मेरे,
कैसे आऊँ दर पर तेरे, दुर्गम पथ दुर्गम भव फेरें,
हे नाथ अनाथ का हाथ ग्रहो, भव पार करो साहेब मेरे,
इस अंतर को गुरु दूर करो...

9. तुम्ही मात मेरे

तुम्ही मात मेरे तुम्ही तात मेरे सखा बंधु गुरुवर तुम्ही प्राण हो
तुम्ही मेरे धन हो तुम्ही ज्ञानबल हो हर श्वास के तुम आधार हो

तुम्ही नीर निर्मल हो सुंदर सरोवर, जहाँ धोए प्राणी सभी पाप को,
तुम्ही हो हृदय में वो शीतल सा चन्दन, मिटायें जो चित के संताप को,
घनादार छाया के तुम हो तरुवर, मिले शांति सबको वो विश्राम हो ।

कभी जो न क्षय हो सदानंदमय हो, अखंडित अक्षय भण्डार हो,
रही ना चिदाकाश में आश कोई, तुम्ही तुष्ट खुद में सरोबार हो,
खिले आत्मगुण के सुमन जिसमे सुरभित,
सुवासित तुम्ही वो ही उद्यान हो ।

तुम्ही ज्ञान का दीप हो वो जगत में, मिटायें अँधेरा जो अज्ञान का,
अनादि के दुर्ध्यान की धूं उडाने, तुम्ही धूपघट हो सुध्यान का,
बने अर्घ जीवन चरण का तुम्हारे, हृदय में सदा ये ही उद्‌गार हो ।

10. सब चलो गुरु के

सब चलो गुरु के देश, प्रेमीवेश में मंडल सारा;
वहाँ बरसे अमृत धारा ।

वहाँ कामक्रोध की गंध नहीं और जन्मादिक दुःख द्वंद्व नहीं;
कहे नेति नेति श्रुति ने है उसे पुकारा ।

वहाँ जात-पात की चाल नहीं, कोइ राजा या कंगाल नहीं;
समदृष्टि से है सब ही एकाकारा ।

त्रितापों की जो ज्वाला है, सद्‌गुरु बुझाने वाला हैं;
वहाँ नित्य सुख सागर हैं अपरंपारा ।

जो भूले-भटके आते हैं, वो सीधी राह पे जाते हैं;
वहाँ सोहं शब्द का बजता है नगारा ।

सद्‌गुरुजी शांतिदाता हैं, वो त्रिलोकी के त्राता हैं;
है मोक्षमार्ग के सद्‌गुरु अंतरज्ञाता ।

11. गुरु मिले हमको

अब आयो उर में, आनंद अपार (२)

कि गुरु मिले हमको तारणहार (२)

हो तारणहारे हो पालनहारे,

करुँ तेरी जय जय जय जयजयकार ।

परम पुनीत है चरणन, उनकी महिमा अपरंपार,

चरणामृत को शीश लगाऊँ, निशदिन बारंबार;

हो गुरु चरणन (२) करे भवपार । कि गुरु मिले..१

गुण रत्नाकर गुरुवर मेरे, गुणमणि अगम अपार,

जनम जनम के संचित मुझ में, अवगुण विषय विकार;

हो मिट जायेंगे (२) विषय विकार । कि गुरु मिले...२

शरणागत को पार लगाना, यहीं तुम्हारा काम,

करुणाधारी कृपा करो यह, विनती आठें याम;

हो गुरुवचन को (२) पालु शिरधार । कि गुरु मिले...३

12. संत चरण में नवाये

संत चरण में नवायें, शीश भवि प्राणी,
मन, वदन हैं शुद्ध जिनका, अमीयभरी वाणी ।

हे वीतरागी, हे समभावी, ज्ञानसुधारस सिंधुस्वामी;
सहजानंदी, हे जगनामी, प्रगट हरि गुरु हृदयाभिरामी;
मुखमंडल अद्‌भुत ही चमके अंतर आतम ज्योति दमके;
आपके समीप वैर छोड़े जग प्राणी, संत चरण में...

आतमरामी ओ वनवासी, शोभे ज्यूँ चन्द्र पूरणमासी;
अकिंचन हो जग से उदासी, दुर्धर घोर तपे निर्-आसी;
निज वैभव में रमण करे जो, अचल अकम्पित ध्यान धरे जो;
एक दो घड़ी में बने भगवन् समानी, संत चरण में...

ज्ञान सरिता उर से बही हैं, न कोई संशय न भ्रमणा रही हैं,
चरण शरण में प्रीत लगी हैं, इनको पाने की आस जगी हैं;
जी करता हैं यही बस जायें, दुर्लभ जीवन सफल बनाये;
अब इनकी छाँव में ये ज़िंदगी बितानी, संत चरण में...

चन्दनसम शीतलता मन की, धूप दहन सम विरहा अगन की;
दीपकसम ज्योति आतम की, श्रद्धा-भक्तिमय राह मिलन की;
विनती प्रभुजी के लघुनंदन को, पूजूं ऐसे हृदय कुंवर को;
भाव सुमन ले कर में, अँखियों में पानी, संत चरण में...

13. साहेब तेरे चरणों

साहेब तेरे चरणों में, उलझन सुलझी;
छूटी फिकर अब आज और कल की ।

चहुं ओर स्वारथ की जंजीरों में उलझी;
कडीयाँ ये टूटी, मैं जंजीरों से छूटी ।

पंथ मतों की माया में उलझी;
भ्रम में थी अटकी में, भवमांही भटकी ।

सुख और दुःख के अंगारों में झूलसी;
समता के सागर में, लागी रे डूबकी ।

पल पल विषयों की, दाह में झूलसी;
संत सरोवर सलील से सुलझी ।

14. मैं संतन को दास

मै संतन को दास जिन्होंने मन मार लिया

मन मारी तन वश किया, किया भरम सब दूर,
बाहर तो कछु दीसत नाहीं, भीतर चमके नूर...
जिन्होंने...

काम, क्रोध, मद, लोभ मार के, मिटी जगत की आश,
बलिहारी उन संतन की, जे प्रगट किया प्रकाश...
जिन्होंने...

आपु त्याग जगत में बैठा, नहीं किसी से काम,
उनमें तो कछु अंतर नाहीं, संत कहो चाहे राम...
जिन्होंने...

नरसीजी के सद्‌गुरु स्वामी, दिया अमीरस पाय,
एक बूंद सागर में मिल गई, क्या करे जमराय...
जिन्होंने...

15. जीवन में आनंद

जीवन में आनंद आये, उर में गुरु नाम समाये,
सद्गुरू अनुग्रह जो पाये, यह जनम सफ़ल हो जाये,
यह जनम सफ़ल हो जाये, उर में गुरु नाम समाये

गुरु प्रेम को कैसे बखाना, गुरु लख लख मात समाना,
गुरु प्रेम मेह बरसाये, अंतर शीतलता छाये,
अंतर शीतलता छाये, यह जनम सफ़ल हो जाए...

तुझ मुखमंडल ज्योतिर्मय, रही शान्ति अनंत सुधामय,
तव दर्शन पाप नशाये, उत्साह नवल भर जाये
उत्साह नवल भर जाये, यह जनम सफ़ल हो जाए...

गुरु शरण रहो कर जोड़ी सब लोक लाज भय छोड़ी,
गुरु अंतर ज्योत जगाये, यह जनम मरण मिट जाये,
यह जनम मरण मिट जाये, यह जनम सफ़ल हो जाए...
जीवन में आनंद आये...

16. खम्मा खम्मा

खम्मा खम्मा रे व्हाला खम्मा खम्मा

खम्मा खम्मा रे व्हाला खम्मा खम्मा

हृदये आवो गुरुवर आवो, आवो तमने खम्मा खम्मा

खम्मा रे घणी खम्मा व्हाला खम्मा रे घणी खम्मा (२) हृदये...

आवो रे अंतरमाथी नहीं रे विसारुं

आवी ने जोओं उरना तार व्हाला (२) तमने खम्मा खम्मा. हृदये...

अहोनिश तारी सेवामां दिन गाळुं

भूल्यो छुं दुनियानुं भान व्हाला (२) तमने खम्मा खम्मा. हृदये...

गुणथी भरेला एवा महेरामण जेवा

दीठ मे जिनजीना लाल व्हाला (२) तमने खम्मा खम्मा. हृदये...

चरण शरणमां प्रीतडी बंधायी एवी

भवसागरथी अमने तार व्हाला हो...

आवागमन निवार व्हाला, तमने खम्मा खम्मा. हृदये...

17. सूत्र गीत

मारा अंतरना एक तारामां निकळे छे झनकार,
गुरु आत्मानंदना नामनो थाओं जय-जय कार
जेणे सूत्र अनोखुं बतावी मारी अंतर ज्योत जगावी,
जय गुरुदेवा सद्गुरु-देवा
हुं लख चौरासी रखडी रह्यों, कई खबर नथी हुं कोण छुं
हुं कोण छुं ! क्यांथी थयो शुं स्वरुप छे मारुं खरुं
करुणाधारी मम उपकारी, हितकारी वचनगुरु कही रह्या(२)
तू देह नहीं वाणी नहीं इन्द्रिय अरु काया नहीं
शुद्ध चित्त आनंद स्वरुप तू आत्मा छे ! तू आत्मा छे !
हुं आत्मा छुं ! हुं आत्मा छुं !
हुं आत्मा छुं, पण शुद्ध नथी अने विषय विकारथी मुक्त नथी
हवे शुं करुं हुं क्या जाऊँ गुरुवर कहो हवे शुं करूँ
करुणाधारी मम उपकारी हितकारी वचन गुरु कही रह्या
सेवक ने स्वामी करनारा, एवा देवगुरु ना शरणे जा
तन मन जीवन अर्पण करी शरणागत एनो सांचो था
तू सेवक छे, हुं सेवक छुं ! आपनो सेवक छुं !

हवे रागद्वेष ने टाळ्वा, निज साम्यस्वरुप ने पामवा (२)
हितकारी वचन गुरु कही रह्या (२)
आ भूमंडल पर रहनारा सौ जीव जगत नो मित्र छुं,
सौनो मित्र छुं । ४

• • •

18. जय सद्‌गुरु वंदन

जय सद्‌गुरु वंदन, जय सद्‌गुरु वंदन.

परम कृपाळु, परम कृपाळु, तेजोमय दर्शन.
जय सद्‌गुरु वंदन.

परम सहारे, दुःख निवारे, हरते सब कंदन,
जय सद्‌गुरु वंदन.

परमानंदम्, आत्मानंदम्, करते आत्मरमण
जय सद्‌गुरु वंदन.

19. आत्मानंद गौरवगाथा

समकितमूर्ति संत चरण में वंदना, प्रेम मूर्ति गुरु चरण में वंदना
समतामूर्ति संत चरण में वंदना, मम उपकारी गुरु चरण में वंदना
वंदन शत शत वंदन, वंदन शत शत वंदन.... ।
गुरु चरण में करके वंदन, तोडूँ भव के बंधन । वंदन शत शत वंदन

१. वंदनीय यह वसुंधरा भारत भूमि महान,
आत्म साधना साधन रत संत यहाँ के प्राण,
संतों की इस परम्परा में 'आत्मानंद' इक नाम,
आत्मानंद की अभिलाषी मैं करुँ चरण में प्रणाम ।
वंदन शत शत वंदन...

२. गुर्जर प्रांत में कर्णावती नगर है जन्म स्थान,
रत्नकुक्षी माँ भगीरथी वीरजी पुत्र महान,
दो दिसम्बर उन्नीस सो इकत्तीस को जनमे थे,
बालक वय से बाल मुकुंद विलक्षण लगते थे ।
वंदन शत शत वंदन...

३. लौकिक शिक्षा के सह करते ग्रंथों का वांचन,
धर्म नीति और राष्ट्र हितों का करते नित चिंतन

देश विदेश से उच्च पदवी ले वैद्य पद पाया,
फिर भी मन के इक कोने को रास न कुछ आया ।
वंदन शत शत वंदन...
कुंद कुंद के तीन रत्न से हुआ आत्म मंथन,
पूर्व जन्म के संस्कारों का हुआ ये उद्‌गाटन
वीतराग के प्रशस्त पथ पर हुआ हृदय अर्पण,
देह भिन्न निज आत्म स्वरुप का होने लगा दर्शन ।
गुरुदेव महिमा आपकी है भारी, नहीं आपके समान मम उपकारी.

४. गृहस्थ धर्म से विरत हुई इस मनोदशा को जान,
कहे पति से शर्मिष्टा श्री सन्नारी है महान्
आत्म श्रेय हित गमन करो प्रभु वीतराग पथ पर,
घर समाज कर्तव्य कुटुम्ब सब छोडो अब मुझ पर
गुरुदेव महिमा आपकी है भारी, नहीं आपके समान मम उपकारी.

५. अजितनाथ जिन मंदिर राजे सहजानंद वर्णी,
बोध ग्रहण कर उनसे बनते दोनों ब्रह्मव्रती
तीर्थ वंदना संत समागम ग्रंथों का वांचन,
चिंतन मंथन लेखन और दिन रात यही साधन
गुरुदेव महिमा आपकी है भारी, नहीं आपके समान मम उपकारी.

६. कुंदकुंद के पाद पद्म का परोक्ष आश्रय ले,
परमागम का स्थान बनाये हृदय सिंहासन पे,
कल्पतरु श्री राजचन्द्र की छाया छत्र तले,
राजचन्द्र वचनामृत का नित पीयुष पान करें ।
गुरुदेव महिमा आपकी है भारी, नहीं आपके समान मम उपकारी.

७. एकांत वास के रसीक बने वे वन पर्वत खोजे,
साबरमती के तट पर 'कोबा' ग्राम आ पहुँचे,
वीरप्रभु श्री कुंद कुंद और राज कृपा बरसे,
श्रीमद् राजचन्द्र आध्यात्मिक साधना केन्द्र बने (गुरुदेव.)
गुणनिधि संत आराधन करके गुण सौरभ महकाये, गौरव गाथा गाये
संत सुगुण को धारण करके जीवन सफल बनाये, गौरव गाथा गाये

८. साबरमती के तट पर कोबा धाम है,
पार्श्वनाथ जिन मंदिर ललित-ललाम है,
प्रेम भक्ति सौहार्द भरा शुभ स्थान है,
साधक वृंद के जीवन का ये प्राण है ।
ज्ञान ध्यान साधना का सुंदर सुधाम है,
बाल युवा वयधारी सबका कल्याण है,
राज प्रभु का कृपाधाम यह जीवन सफल बनाये, गौरव गाथा गाये.

९. श्री नेमिनाथ निर्वाण भूमि गिरनार में, तीर्थराज पर चले त्याग आराधने,
कुंभोज तीर्थ के 'समन्तभद्र' गुरु आन से, पूर्व नाम और वेश वहाँ पर त्यागते
नर नारी नेक चले संघ लेके साथ में, नियम व्रतों को धारे, आतम आराधने
समन्तभद्र गुरु की आज्ञा से 'आत्मानंद' कहाये, गौरव गाथा गाये.

१०. धर्म प्रभावना करते देश-विदेश में,
आत्म गुणों की वृद्धि आत्म प्रदेश में,
करी अनेकों संस्कारों की गोष्ठियाँ,
जीव दया हित ग्राम नगर में प्रेरणा ।
चारशताधिक चास करी तीर्थ वंदना,
पञ्चविंशति सहस व्याख्यानों की श्रृंखला,
आत्म प्रशंसा कीर्ति कामना स्पर्श नहीं कर पाये, गौरव गाथा गाये.

११. जग में दिये त्रय सूत्र ये उपहार सम,
"हुं आतमा छुं" हो यही निर्णय प्रथम,
"आपनो सेवक छुं" ये मार्ग प्राप्ति का चरण,
"सौनो मित्र छुं" सबके प्रति व्यवहार धरम ।
अनुभव की लेखनी से ग्रंथ लिखे आपने,
साधना सोपान आदि साधना को साधने,
जल में कमलवत् भिन्न जीवन के सूत्र हमें बतलायें, गौरव गाथा गाये.

१२. गुरु पूर्णिमा दिन दो हजार आठ का,

प्रारम्भ हुई इक त्याग पथ की परम्परा,

त्यागी समर्पित साधकों ने प्रण लिया,

तन मन जीवन सब आपको अर्पण किया ।

निज पर हितकारी वेश दिया आपने,

धर्म के मरम का संदेश दिया साथ में,

बाल ब्रह्मचारी साधक भी उनकी शरण में आएं, गौरव गाथा गाये.

आत्मानंद मंगलम्...

१३. जिनके सुयश के शंख की गुंजार थी भारी,

प्रारब्ध को सुख की घड़ी ये रास ना आई,

तेबीस नबेम्बर दस को पक्षाघात हुआ भारी,

समता से साहेब ने सभी विपदाएँ स्वीकारी ।

१४. सत्संग भक्ति में डूबी आनंद अमीरी थी,

चिन्ता नहीं इस देह की अलमस्त फकीरी थी,

उनके गुणों की सुरभियाँ जग में महकती थी,

अध्यात्म की सुवास आकर्षित करती थी ।

आत्मानंद मंगलम्...

१५. हर जाति पंथ परम्परा के संत आते थे,

कर भेंट उनसे हर कोई संतोष पाते थे ।

तत्वार्थ को समझाने की अद्‌भूत सुगमशैली,

जिज्ञासुओं को शांत करती वो नजर पहली ।

१६. आयुष्य कर्म के पास कुछ दिन की ही घडियाँ थी,

असाता के प्रहार की कोई न सीमा थी ।

इस देह रूपी देव को पीड़ा असहनीय थी,

पर आत्ममंदिर में लगी शांति समाधि थी ।

आत्मानंद मंगलम्...

मृत्यु महोत्सव की भैरी अब मंगल वाद्य बजाये, गौरव गाथा गाये.

राज कृपा से राज भक्त ये मृत्यु महोत्सव मनाये, गौरव गाथा गाये.

१७. उस्मानपुरा के पार्श्व प्रभु मंदिर में,

अमितसागर निर्ग्रन्थ श्रमण सान्निध्य में,

अंतिम समय में अंत की आराधना,

अपूर्व अवसर प्राप्ति की आराधना ।

सबको क्षमाया और करी क्षमा याचना,

समाधि को साधने करी प्रभु प्रार्थना,

साधु संत के दिव्य वचन से मंगल आशीष पाये, गौरव गाथा गाये.

१८. प्रारंभ हुई अब अंत की आराधना, पूर्ण हुई जीवन की मंगल भावना,
नवकार मंत्र की धुनमय संगीत था, चारों तरफ शुभ साधकों का समूह था
धन्य धन्य हो रहा ये राज दरबार था,
रोम-रोम में समाया सबके उल्लास था ।
जीवन साधना शिखर पे अंतिम समाधि कलश चढ़ाये ।
गौरव गाथा गाये.

१९. मंद मधुस्मित मुखमंडल पर आपका,
वत्सलभरा आशीष तुम्हारे हाथ का,
बालकसमा व्यक्तित्व की निर्दोषता,
कैसे भूले संगम तुम्हारे साथ का ।
भूले से भी आपको कभी न भूल पाएंगे,
दरस की आस को कभी न छोड़ पाएंगे २
हृदय पटल पर स्मृति पटलों का वेग सहा न जाये ।
गौरव गाथा गाये.
आत्मानंद मंगलम्...

२०. स्वर्गारोहण को निरखता मंगल महोत्सव था,
करबद्ध त्यागी वृन्द का उत्तम समर्पण था,

दर्शन को आये राज संतों का समागम था,

समाधिस्थ हुआ अंतिम दरश अद्‌भुत दशा का था ।

२१. उन्नीस जनवरी बीस को अंतिम विदाई ली,

गौरवमयी श्रद्धांजलि दे आँख भर आई

जयवंत होवे संत आत्मानंद वैरागी,

जिनकी अमर गाथा को गाये कोई बड़भागी ।

आत्मानंद मंगलम्...

२२. अध्यात्म के उपवन में डाला बीज जो तुमने,

वट वृक्ष बन फलता रहेगा इस धरा नभ में,

इस "कोबा तीर्थ" के नाम से जीवंत जन मन में,

जब तक है सूरज चाँद "आत्मानंद" अमर जग में ।

आत्मानंद मंगलम्, आत्मानंद मंगलम्,

आत्मानंद मंगलम्, आत्मानंद मंगलम्...

21. गुरुदेव तारा

गुरुदेव तारा चरण मां फरी फरी करुं हुं वंदना,
स्थापी अनंतानंत तुझ उपकार मारा हृदयमां,
गुरुदेव अविनय कई थयुं अपराध जे कई पण थया,
करजो क्षमा अम बाळने ए दीन भावे याचना ।

गुरुवर नमूं हुं आपने अम जीवनना आधारने,
वैराग्य पूरित ज्ञान अमृत सिंचनारा मेघने,
सम्यक्त्व आदिक धर्म पामूं तुझ चरण आश्रय वड़े,
जय जय थाओ गुरु आपनो सौ भक्त शासनना चहे ।

राज सुमिरन

1. हे युगपुरुष

श्री राजचंद्र नमो नमः, गुरु राजचंद्र नमो नमः
हे युगपुरुष तव नाम से अंतर में लगता ध्यान है
श्री राजचंद्र वचन सुधा से जगत का कल्याण है
मत पंथ मिथ्या मेघ से सद्धर्म रवि था छिप गया,
तव ज्ञान रश्मि ज्योत से सद्धर्म मर्म उदय हुआ,
गुरुगम बिना इस जगत में ग्रंथों का ज्ञान अज्ञान है ।
श्री राजचंद्र..

तन मन सभी थे झूँझते पर आतमा संतप्त है,
साधन अनेकों सध रहे पर साध्य का नहीं बोध है,
साधन से साध्य की सिद्धि का अद्भूत दिया समाधान है ।
श्री राजचंद्र...

कई जन्म के शुभ कर्म का फलदान उनके फल रहा,
जिनका तुम्हारी शरण में निज आत्म श्रेय है सध रहा,
तन मन वचन और आत्म से तव चरण में प्रणिपात है ।
श्री राजचंद्र...

2. कृपालु राजराजेश्वर

कृपाळु राजराजेश्वर कृपाळु देवदेवेश्वर (धुन)

कृपाळु परम दयाळु छो, गुरुवर परम कृपाळु छो;
हृदयना नाथ स्वामी छो, सुखोंना धामधामी छो ।
अमी झरतां ए नयनोंथी निरंतर प्रेम वरसे छे,
करे शीतल तपन दिलनी करुणरस हेत वरसे छे,
गुरु हृदयाभिरामी छो, हृदयना नाथ स्वामी छो ।
अतिशयकारी तुझ वाणी, परमपद पंथ बोधे छे,
जगाड़ी भाव निद्राथी, करमनो फंद छेदे छे,
गुरु ज्ञानावतारी छो, हृदयना नाथ स्वामी छो ।
धन्य जननी धन्य नगरी धन्य आ विश्व ने धरणी,
धन्य तुव भक्त के अम पर परम प्रेमे कृपा वरसी,
सहज आनंदकारी छो, हृदयना नाथ स्वामी छो ।
शांतमूर्ति, ज्ञानमूर्ति, विदेही राज ने वंदन,
प्रशममूर्ति, प्रेममूर्ति, सद्गुरु राज ने वंदन,
स्वरूप सहजात्मरामी छो, हृदयना नाथ स्वामी छो ।

3. ज्ञानमूर्ति रायचंद

रायचंद, रायचंद, रायचंद देव. (धून)

ज्ञानमूर्ति रायचंद भक्तवत्सल नाथ,
ज्यारे तमारी मूर्ति जोऊं अंतरंगथी नाथ,
आनंदघन आत्मानो, दर्श थाय राज (२)
हे कृपाळु राज, हे कृपाळु राज,
हे कृपाळु, हे कृपाळु, हे कृपाळु राज.
वीतराग भावमां प्रशस्त मूर्ति राज,
आंख छे खुली छतां आत्म जोवे राज,
चित्तवृत्ति चैतन्यमां स्थिर जोउं राज,
ज्यारे तमारी मूर्ति जोउं अंतरंगथी नाथ...
प्रशांत शांत रस प्रसरती सौम्यमूर्ति राज,
अनात्म आत्म भेद करती, प्रज्ञ मूर्ति राज,
प्रत्यक्ष मोक्षमार्गनी सुबोधमूर्ति राज,
ज्यारे तमारी मूर्ति जोउं अंतरंगथी नाथ...
सद्‌गुरुदेव कृपा वृष्टि थई राज,
ज्ञानमूर्ति ओळखवानी दृष्टि मळी राज,
हृदय जोउं संतनुं गुरुनो छे प्रताप,
ज्यारे तमारी मूर्ति जोउं अंतरंगथी नाथ...

4. अहो परमकृपालु

अहो परम कृपालु गुरुराज, चरण तेरे चित्त को सुहाते हैं ।
करूँ सेवा तेरी दिनरात, वचन तेरे भव से तिराते हैं ।

सन्मार्ग दाता सुख के प्रदाता तुझ सम नहीं कोई दूजा,
पाकर परस तेरी करके दरस तेरा चरणों को तेरे पूजा ।
सोया आतम जगा दे गुरुराज, अरज तेरे दर पे सुनाते हैं ।

शिव के पथिक जन पाते हैं छाया, तु है सघन सा तरुवर,
हर लेता जग के संताप सारे, सुंदर सा शीतल सरोवर ।
पा के सूरज सा तेरा प्रकाश, जगत जन तमस नशाते हैं ।

ज्ञानावतारी गुरु सद्गुण भंडारी गुरु, अद्भूत महिमा धारी
सम्यक्त्वधारी सब संशयटारी, भव्यों के भाग्य बिहारी
हे युगपुरुष योगीराज, तुझे हम शीश नवाते हैं ।

5. कृपाळुनी वाणी

कृपाळुनी वाणी हो कृपाळुनी वाणी,
कोइ तरवाना कामीअे जाणी.
कृपाळुनी वाणी...

नथी गच्छ मतनी कोई कल्पना, नथी जाति वेशनी प्रपंचना,
साची वीतराग देवनी प्रसादी.
कृपाळुनी वाणी...

अेना वचने सद्‌गुरु उपासना, अेना शब्दे सत्संग आराधना,
थइ विनयी विवेके आराधी.
कृपाळुनी वाणी...

अेना आत्माने स्पर्शीने जे आवी, वाणी अनुभव रसथी सिंचाणी,
सांचा सद्‌गुरु देवनी निशानी,
कृपाळुनी वाणी...

6. राजचंद्र तुम विशाल

राजचंद्र तुम विशाल दीपक तुमसे अगणित दीप जले
हुआ दूर तम निज आतम से जीवन के सब दुःख टले
भजो राजचंद्र नाम जपो राजचंद्र नाम (२)

राजचंद्र तुम शांत-कान्त हो, वीतराग पंथे चले,
सुज्ञ प्रज्ञ तुम ब्रह्म तेजमय, अविरल अनथक बढे चले,
नवप्रभात जीवन में आयी अतिदुर्लभ तव दरस मिले,
तुम्हारी अनुपम मूरत निरखी, हिय नयनन मम तृप्त भये,
तन मन जीवन सर्व समर्पण चरण समर्चन भाव धरे,
हुआ दूर तम...

वचनामृत गुरुराज तुझ परमौषध भव रोग के,
ग्रंथ-ग्रंथि सब भेद मिटे जब मर्म हृदय में आन बसे,
निज स्वभाव सिद्धि कराये वस्तु-विवेक विचार लहे,
परम कृपालु परम दयालु, प्रेमराज परमेश प्रभु,
पाकर पूरण गुरु तुम सम हम, धन्य धन्य है भाग्य खिले,
हुआ दूर तम...

7. चालिया पंथे

चालिया पंथे तमारे, पंथ परम बतावजो,
मार्ग सांचो चिंधवाने, हे कृपाळु आवजो ।

मोह मिथ्यातम भयानक, घोर अनादि रातडी,
कल्पना स्वप्नोमां डूबी, भाव निद्रा आकरी;
ज्ञान तेज रवि किरण तमे ज्ञान ज्योत धरावजो ।
मार्ग सांचो...

काम, क्रोध, कषायनी, आ आंधी एवी आवती,
लोभ माया माननुं, कुचक्र साथे लावती,
पतित थाता पंथे पगलां, हाथ मारो झालजो ।
मार्ग सांचो...

संत करुणावंत सद्गुरु, भ्रंत तंत नशावजो,
शांति समता साम्यमय, निज स्वरुप सत् प्रगटावजो,
स्वरुप विश्रांति करावी, भ्रमण भवनो टाळजो ।
मार्ग सांचो...

8. तमारी वचन सुधा

तमारी वचन सुधा गुरुराज मिटावे जनम-जनम नी प्यास,
शमावी विष अनादिनो करावे अमर पदमां वास.
करोड़ों कंठ्थी गाऊँ छतां ना संभवे गुणगान
समन्दरनी करी स्याही लखुं तो ना लखाय वखाण,
चरणरज शब्द सिंधुनी बनूं तो भव सफल थई जाय
तमारी वचन सुधा गुरुराज...
विषद वाणी अनुपम आ नथी लेखन के ना रचना,
युगों युगना आ योगीनी वहे छे आत्मनी स्फुरणा,
सुगंधी वीर वाणीनी वचनमां आपना प्रसराय
तमारी वचन सुधा गुरुराज ...
सजावी भाव रत्नोंथी हृदयना स्वर्ण पत्रक पर,
मढ़ावु गुरु अनुग्रहथी वचन आ आत्मज्योतिर्कर,
अनुभव शब्दमूर्तिनुं करी पामुं स्वरूप विश्राम
तमारी वचन सुधा गुरुराज ...
गुरुराज गुरुराज गुरुराज गुरुराज
गुरुराज गुरुराज गुरुराज गुरुराज

9. आत्मसिद्धिशास्त्र स्तुति

भव्यजनो के भाग्य से कृपा हुई गुरु राज की,
करे अर्चना हम सब मिलकर आत्मसिद्धि सत्शास्त्र की
कलियुग में षट् दर्शन के मर्म भरे इतिहास की.
करे अर्चना...

जय जय जय गुरूराज की आत्मसिद्धि सत्शास्त्र की (२)

आत्मा है वह नित्य है कर्ता भोक्ता जीव है,
मोक्ष है और मोक्ष की प्राप्ति का सदुपाय है,
षट्पद से सत्शिष्य की शंका के समाधान की
करे अर्चना...

दर्शन ज्ञान वैराग्य और भक्ति संयम साधन है,
सद्-गुरु आश्रय चरण सेवन ये मुक्ति के सदुपाय हैं,
कलियुग में षट् दर्शन के मर्म भरे सुविधान की,
करे अर्चना...

क्रिया कांड और शुष्कज्ञान में, स्याद्वाद नय घोल रहे,
करुणाधारी राज राजेश्वर, सम्यक् पथ पर मोड रहे,
अद्भूत कला दिखाई इसमें, निश्चय और व्यवहार की,
करे अर्चना...

10. आरती

(तर्ज - जय आद्यशक्ति)

जय परम कृपाळुदेवा, जय परम कृपाळुदेवा,
पतितपावन स्वामी (२), करूँ तुझ पद सेवा । जय...
ज्ञानकला पारंगत, आगम अवधारा (२)
दिव्यज्योति परकाशक (२), आतम आधारा । जय...१
तुम हो दानी अनूप, शक्ति-भक्ति दाता (२)
बिन याचै मिल जावे (२) जे तुव गुण गाता । जय...२
शब्दसिंधु हे काव्यसिंधु, प्रभु जिनशासन सिरताज (२)
ज्ञान अवतार कहावौं (२) योगीश्वर गुरुराज । जय...३
हे परमात्मास्वरुप, हे समता मूर्ति (२)
सौम्यद्रष्टि भली आपो (२) हे करुणामूर्ति । जय...४
वचनामृत तुव तीरथ, जय हो युगपुरुषा (२)
मम उर ताप शमावै, मम उर भक्ति बढावै,
तुझ मुख परमेशा.. जय...५
जगजन वल्लभरुप, हे देवानंदन (२)
कोटि रवि-शशि लाजे (२), जिनजी के लघुनंदन । जय...६
दयाधुरंधर धीर, जय गुणगंभीरा (२)
गरीबनिवाज कहावौं (२), हरो भवभय पीडा । जय...७
जय सहजात्मस्वरुप, जय सहजानंदी (२)
जय जय गुरु राजेश्वर (२) जय आत्मानंदी । जय...८

आत्म सुमिरन

1. अहो ! सानंदाश्चर्यम् !

अहो ! सानंदाश्चर्यम् !

वीर्योल्लास !

परम प्रेम !

सर्वसमर्पणम् !

धन्य दिवस आत्मस्वरूप प्रकाशनं
धन्य दिवस निजस्वभाव उद्गाटनं, अहो सानंदाश्चर्यम्... ।
जे वडे आत्मा परमात्मानी 'कृपा' पाम्यो
जे वडे आत्मा सत्पुरुषनी चरणरजने पाम्यो
जे वडे आत्मा निजस्वरूपने पाम्यो
जे वडे आत्मा लोकोत्तरताने पाम्यो
जे वडे आत्मा स्वभावभावने पाम्यो
जे वडे आत्मा अपूर्व आत्मविश्वासने पाम्यो
जे वडे आत्मा निःशंकताने पाम्यो
जे वडे आत्मा निर्भयताने पाम्यो
जे वडे आत्मा निसंगतानी भावनावाळो थयो
जे वडे आत्मा शुद्धताने पाम्यो

जे वडे आत्मा ज्ञायकरूप रहेवा लाग्यो
जे वडे आत्मा ज्ञेयमग्नतामांथी निवर्त्यो
जे वडे आत्मा दृष्टामात्र रहेवा लाग्यो
जे वडे आत्मा रत्नत्रयरूप थयो
जे वडे आत्मा स्वानुभव-अनुगामी थयो
जे वडे आत्माए अभानना पराभव कर्यो
जे वडे देहभिन्न निजतत्त्वस्वरूपने पाम्यो
जे वडे आत्मा तत्त्वतः मुमुक्षुपणाने पाम्यो
जे वडे आत्मा 'चारित्रमार्ग'ने अनुसरतो थयो
जे वडे आत्मा प्रतिबुद्धताने पाम्यो
जे वडे आत्मा 'स्व' आश्रयने पाम्यो

बस जय थाओ !

विजय थाओ !

आत्मा परमप्रेमथी ते ज सत्पुरुषना वचनोनुं, मार्गनुं अने भावनुं अनुकरण करो, जे वडे ते सत्पुरुषो पूर्णपुरुषो बन्या.

2. चिदानंद में

चिदानंद में समा जाऊँ, जीवन की साधना ये ही,
जीवन की साधना ये ही, प्रभु आराधना ये ही, चिदानंद...

जगत की वासनाओं से विचलित मन हुआ करता,
अनंती कामनाओं से भ्रमित ये मन हुआ करता,
मैं सहजानंद को पाऊँ जीवन की साधना ये ही
जीवन की साधना ये ही, प्रभु आराधना ये ही, चिदानंद...

कहीं माया के वश होकर ये जीवन व्यर्थ न जाये,
कहीं विषयों का विष पीकर ये नरतन व्यर्थ न जाये,
मैं ज्ञानानंद को पाऊँ जीवन की साधना ये ही
जीवन की साधना ये ही, प्रभु आराधना ये ही, चिदानंद...

हृदय की भावना है नाथ तुझमें लीन हो जाऊँ,
तुझमें लीन होकर के मैं मुझमें लीन हो जाऊँ,
मैं "आत्मानंद" को पाऊँ जीवन की साधना ये ही
जीवन की साधना ये ही, प्रभु आराधना ये ही, चिदानंद...

3. नयणा भीतर

नयणा भीतर वळशो क्यारे (२)

बाह्य पदारथ बहु बहु जोया, भटकी ब्हारे ब्हारे;
अंतरशोध चलावाने हवे, भीतर वळशो क्यारे ।

जग परथी वाळी लइ तमने, ढाळुं ज्यां हरि पासे,
त्यां तो पळमां कंइये पहोंचो, चंचळना ओछा रे ।

शंख छीप अगणित वीण्या अहीं, सागरने पगथारे,
मोती लेवा महेरामणमां, मज्जन करशो क्यारे ।

साधनरूप गण्याता तमने, बंधन आज बन्या रे,
हरिदर्शन कां आड़े आवो, नयणा ओ मारा रें ।

नयणा भीतर वळशो क्यारे...

4. दो चार दिनों की

दो चार दिनों की माया में ना कुछ तेरा ना कुछ मेरा
अलमस्त फ़कीरी रमता जा आनंद स्वरूप बस है तेरा २

इस देह में देह संबंधों में तू परिचय अपना है करता,
माटी की ममता में उलझा क्यूँ दूर स्वयं से है रहता,
काया की माया तज दे तो परमात्मस्वरूप बस है तेरा
अलमस्त फ़कीरी...

अनुकूल तेरे जब होता तो उस क्षण को सुख तू है कहता,
प्रतिकूल तेरे जब होता तो उस क्षण को दुःख तू है कहता(२)
सुख-दुःख झूठ एक है सपना, न सुख तेरा न दुःख तेरा
अलमस्त फ़कीरी...

कुछ तू करता कुछ मैं करता इस भ्रम में तू क्यूँ है रहता,
यहाँ कोई कुछ भी ना कर सकता जो होना है सो है होता (२)
करता धरता इस जग के हम, ये भ्रम तेरा ये भ्रम मेरा
अलमस्त फ़कीरी...

5. घनघोर विषय

घनघोर विषय भव वन में, अज्ञान घनेरे तम में
हे नाथ ! है घेरा भय ने, वैराग्य अभय दो मन में

मैं राग-द्वेष बंधन से बंधा हूँ तन पिंजर में
बंधन से न मुक्ति मिलती वैराग्य बिना जीवन में
घनघोर...

मुझे मोह के मिथ्या भ्रम ने, योगों के चपल संगम ने,
माया का नाच नचाया, वैराग्य बिना जीवन में,
घनघोर...

एकांत ध्यान आसन में, संतों के चरण आश्रय में,
सत्संग सफल न हो पाया, वैराग्य बिना जीवन में,
घनघोर...

6. सांवरे कब

सांवरे कब होगा दर्शन तेरा
बीते बहुरी रह गया थोड़ा... सांवरे...

बीता बचपन कोरा कोरा, यौवन चंचल घोर अंधेरा;
कब होगा करुणा का वर्षण तोरा... सांवरे...

पल पल विषयों के वश मांही बीता;
मन मरकट हो कबहूं न जीता.
कब होगा अंतर में घर्षण तोरा... सांवरे...

कर्म कलंक का मल जो धोता,
ऐसी दृष्टि का बोध न होता;
कब मिले नैनों को दर्पण तोरा... सांवरे...

हरपल चरणों में शीश न झूकता;
क्षण क्षण तेरा सुमरन चुकता,
कब होगा जीवन अर्पण मोरा... सांवरे...

7. शांत रहूँ मैं

शांत रहूँ मैं शांत बनूँ मै निज शान्ति को ध्याऊँ मैं,
गुरु कृपा का अंजन पाकर आतम दरशन पाऊँ मैं.

आकुल व्याकुल राग द्वेष से इष्ट अनिष्ट की वृत्ति से,
सब में समता भाव हृदय धर, साम्य स्वरूप को पाऊँ मैं
शांत रहूँ मै शांत बनूँ मैं...

विषय कषायों की व्याधि से पृथक रहूँ तृष्णा आधि से,
नित्य उपाधि से जो परे है, सहज समाधि पाऊँ मैं.
शांत रहूँ मै शांत बनूँ मैं...

अडिग अविचल तन की गति हो शांत निराकुल मन की मति हो,
निर्मल निशंकित चित्तवृत्ति से निर्भय निसंगति पाऊँ मैं.
शांत रहूँ मै शांत बनूँ मैं...

8. रहो चेतन

रहो चेतन चिदानंद में, जीवन का सार इसमें है,
जीवन का सार है इसमें है, प्रभु का प्यार इसमें है ।

जीवन में लोभ तृष्णा से सुखों का स्वाद नहीं मिलता,
करो अगणित यतन फिर भी, दुखो का दर्द नहीं मिटता ।
लहो निज आत्म का आनंद, जीवन का...

जगत में कोई कुछ भी तो कभी भी ना हमारा था,
मोह के नैन ने देखा सुनहरा एक सपना था ।
जगाओ नैन निजानंद के, जीवन का...

प्रशंसा के सुमन बिखरे तो मन में मान महकाया,
मिले निंदा के कुछ स्वर तो हृदय में द्वेष अकुलाया ।
रहो समता में सहजानंद, जीवन का...

9. सुधा सिन्धु है...

सुधा सिन्धु है आतम ज्योति, अनुपम सुख को प्रगटावे,
सुपन दशा से मन को जगावे, आवागमन मिटावे, आवागमन मिटावे(२)
चतुर्गति दुखों से थक के, रस नीरस हो जावे जग के,
अब तो अंतर होय उदासी, भोग विषय बिसरावे, आवागमन मिटावे
सोऽहं, शिवोऽहं, सोऽहं, शिवोऽहं...

संत चरण में प्रेम बढ़ाके, सतमारग पर जीवन लाके,
सत्य शील तप त्याग संयम, दया धर्म अपनावे, आवागमन मिटावे
सोऽहं, शिवोऽहं, सोऽहं, शिवोऽहं...

ज्ञान संजीवनी गुरु से पायी, शशि सम शीतल शांति उर आयी,
गुरु चरणों से प्रीति बढ़ाके, दुर्लभ बोध लहावे, आवागमन मिटावे
सोऽहं, शिवोऽहं, सोऽहं, शिवोऽहं...

मन वच कर्म जोग थिर करके, चिंतन मनन ध्यान नित धरके,
नित्य निरंजन आतम ध्यावै, आत्मानंद सुधारस पावै,
धन्य धन्य हो जावे, आवागमन मिटावे
सोऽहं, शिवोऽहं, सोऽहं, शिवोऽहं...

10. अंतरयामी दरस

अन्तरयामी दरस दिखादो
प्यासे है नयना न अब तरसाओ

जग तो बना है ये पापों का डेरा,
चारों तरफ है ये छाया अंधेरा
जगे ज्ञान ज्योति वो दीपक जला दो, प्यासे ...

दुःखियों के तुम ही हो पालनहारे,
भटके हुओ के तुम ही हो सहारे
ये जीवन सफल हो वो राह दिखा दो, प्यासे ...

बीच भँवर में है मेरी ये नैया,
तुम्ही हो भगवन इसके खेवैया
मेरी ये नैया पार लगा दो, प्यासे ...

11. नजर न आवे

नजर न आवे आतम ज्योति

तेल न बाती बुझ नहीं जाती,
नहीं जागत नहीं सोती ।
नजर न आवे...

झिलमिल झिलमिल निशदिन चमके,
जैसा निरमल मोती ।
नजर न आवे...

कहत कबीरा सुनो भाई साधो,
घर घर वांचत पोथी ।
नजर न आवे...

12. चेतन चालो

चेतन चालो ने हवे... सुख नहीं परमां मळे,
आ तो झांझवाना पाणी, तृषा नहीं रे छीपाणी
    तृप्ति नहीं रे मळे...   चेतन...
जड़ ने चैतन्यनी प्रीति रे पुराणी,
    अनंत जन्मारामां करी शुं कमाणी,
मतिमायामां मूंझाणी, आतम शक्ति रे लूटाणी,
    शांति नहीं रे मळे...   चेतन...
दुःखना दरियामां डूबवाने लाग्यो,
    डूबताने गुरुजीए आवीने उगार्यो,
हतो स्वरूपथी अजाण, तेनी करावी पिछाण,
    भवथी मुक्ति रे मळे...   चेतन...
भव्य आत्मा जागे तेने तालावेली लागे,
    प्रभु केरा पंथे पगला भरतो आगे,
चाहे आत्मानुं ज्ञान, साचा स्वरूपनुं भान,
    शाश्वत सिद्धि रे मळे...   चेतन...

13. अपने को आप

अपने को आप भूल के हैरान हो गया,

    माया के जाल में फंसा वीरान हो गया ।

जड़ देह को अपना स्वरूप मान मन लिया,

    दिनरात खानपान कामकाज दिल दिया ।

पानी में मिल के दूध एक जान हो गया,   माया के...

विषयों को देख-देख के लालच में आ रहा,

    दीपक में ज्यों पतंग जाय के समा रहा,

बिना विचार के सदा नादान हो गया,   माया के...

कर पुण्य-पाप स्वर्ग नरक भोगता फिरे,

    तृष्णा की डोर से बन्धा सदा जनम धरे,

पी करके मोह की सूरा बेभान हो गया,   माया के...

सत्संग में जाकर सदा दिल में विचार ले,

    बदन में अपने आप रूप को निहार ले,

ब्रह्मानंद मिले मोक्ष जब ये ज्ञान हो गया,   माया के...

14. मीठो-मीठो बोल

मीठे मीठे बोल तोल तोल बोल,
तोल तोल बोल थारा बोल अनमोल (२)
मीनख जमारो पायो पुण्य रतन धन,
    सत मारग पर राख अडिग मन,
मनडा रे नखरामां क्यों तु भटके,
    क्यों दुनियारो सुख थारे मन खटके;
    रागद्वेषरो विष मत घोल, भाव प्रेमरो उठ हिलौर.
दीनी है विधाता थाने इमरत वाणी,
    क्यूं बोले कडवो क्यूं आंख्या ताणी,
सोच बाता गहरी धीरज धर कर,
    मनसूं वचनसूं कर्मसूं शुभ कर;
    अब तो भीतर रा पट खोल, देख माय नाचे मन मोर.
आखर रूप तू ब्रह्ाने जाण रे,
    करि संगत निजने पहिचान ले,
श्रद्धा तपसूं साध वचन, शुभ कारज दिन-रात मगन;
    प्रभु चरणा में सोंपके डोर, निर्भय हो जगती में डोल.

15. श्री समयसार कलश (155-160) भावानुवाद

सप्त भय से रहित ज्ञानी का स्वरूप

(इहलोक परलोक के भय से रहित)

१. शाश्वत एक चैतन्य ही मेरा लोक सदा से नित्य रहा,
और कही मैं नहीं विचरता अन्य सभी परलोक कहा,
इह परभव के भय से मुक्त वो ज्ञानदेश में ही बसता,
रहे निःशंक सतत वह ज्ञानी नित्य चिदानंद में रमता ।

(वेदना भय से रहित)

२. सुख दुःख का ही निशदिन अनुभव मूढ अज्ञानी नित्य करे,
स्वयं ज्ञान का वेदक ज्ञानी पर-भावों से भिन्न रहे,
जड़ द्रव्यों से जनित वेदना मुझमें नहीं फिर भय कैसा,
रहे निःशंक सतत वह ज्ञानी नित्य चिदानंद में रमता ।

(अरक्षा भय से रहित)

३. नाश कभी नहीं सत् का होता जग में शाश्वत वस्तु का,
ज्ञान स्वरूप मैं नाश न मेरा फिर रक्षण करना किसका ?
स्वयं ज्ञान से मै हूँ सूरक्षित फिर अरक्षा भय कैसा ?
रहे निःशंक सतत वह ज्ञानी नित्य चिदानंद में रमता ।

(अगुप्ति भय से रहित)

४. दुर्ग किला तलघर में छिपकर मूढ सदा भयभीत रहे,
ज्ञान गुहा ही है गृह ऐसा जहाँ न अन्य प्रवेश करे,
ज्ञान स्वरूप में गुप्त हुआ जो कोई उसे क्या लुट सकता ?
रहे निःशंक सतत वह ज्ञानी नित्य चिदानंद में रमता ।

(मरण भय से रहित)

५. आयुकर्म के क्षय को अपना मरण समझता मूढ़ प्राणी,
ज्ञान ही मेरा परम प्राण है यहीं विचारे नित ज्ञानी,
अजर अमर अविनाशी मैं हूँ फिर मृत्यु का भय कैसा ?
रहे निःशंक सतत वह ज्ञानी नित्य चिदानंद में रमता ।

(आकस्मिक भय से रहित)

६. ज्ञान प्रवाह अनंत अनादि अचलित अविरत नित बहता,
स्वतः सिद्ध इस ज्ञान स्वरूप में आकस्मिक भय कब रहता ?
जब जब जो जो होना होता तब तब ही वह है होता,
रहे निःशंक सतत वह ज्ञानी नित्य चिदानंद में रमता ।

(ज्ञानी की महिमा)

७. धन्य ज्ञान की है महिमा और धन्य मुनि महिमाधारी,
स्वानुभव की बात अनोखी शब्दों से है अनजानी,
रजकण बनने उन चरणों की शीश झूका वंदन करता,
भाव भक्तियुत चित्त उपवन के शब्द सुमन अर्पण करता ।

16. भावना दिन-रात

भावना दिनरात मेरी, सब सुखी संसार हो ।
सत्य संयम शील का, व्यवहार बारम्बार हो ।।
धर्म के विस्तार से, संसार का उद्धार हो ।
पाप का परिहार हो, और पुण्य का संचार हो ।।
ज्ञान की सद्ज्योति से, अज्ञानता का नाश हो ।
धर्म के सद् आचरण से, शांति का आवास हो ।।
शांति सुख आनंद का, प्रत्येक घर में वास हो ।
वीर वाणी पर सभी, संसार का विश्वास हो ।।
रोग भय और शोक होवे, दूर हे परमातमा ।
ज्योति से परिपूर्ण होवे, हर जगत का आतमा ।।

अष्टक (संस्कृत)

1. आचार्य श्री कुंदकुंदाष्टक

(अनुष्टुप छंद)

वचनैर्यस्य तुष्यंति प्राणिनः मरुभूमिनां ।
कुंदकुंदमहं वंदे योगीश्वराप्रमत्तकं ।।१।।

(यस्य वचनैः) जिसके वचनों से (मरुभूमिनां) मरुभूमि के (प्राणिनः) ज्ञान पिपासु जीव (तुष्यंति) संतुष्ट/तृप्त होते है ऐसे (योगीश्वराप्रमत्तकं) अप्रमत्त योगीश्वर (कुंदकुंद) श्री कुन्दकुन्द को (अहं वंदे) मैं वंदन करता हूँ ।

यस्य शांतमुखं दृष्ट्वा प्रशान्तिर्जायते हृदि ।
प्रशांतरससम्पूर्ण कुंदकुंदं नमामि तं ।।२।।

(यस्य) जिसका (शांतमुखं) शांत मुख (दृष्ट्वा) देखकर (हृदि) हृदय में (प्रशान्तिः) प्रशांति (जायते) उत्पन्न होती है ऐसे (प्रशांतरससम्पूर्णं) प्रशांत रस से सम्पूर्ण (पद्मनंदी) आचार्य पद्मनंदी को (नमामि) मैं नमन करता हूँ ।

ज्योतिः समयसारेण प्रवचनेन वानिशं ।
प्रकट्यते स्फुरत्युच्चैर्मूलाचारेण भाविनाम् ।।३।।

(समयसारेण) समयसार (वा) और (प्रवचनेन) प्रवचनसार के द्वारा (भाविनाम्) भव्यजीवों की (ज्योतिः) आत्मज्योति (प्रकटय्यते) प्रगट होती है और (मूलाचारेण) मूलाचार से (अनिशं उच्चैः स्फुरति) निरंतर अत्यंत स्फुरित (प्रकाशमान/दीप्त) होती है।

करोति दर्शनंशुद्धं सुकृती रयणोत्तमः ।
वरं निश्चयचारित्रं वर्धते नियमेन च ।।४।।

(रयणोत्तमः सुकृतिः) उत्तम सुकृति रयणसार (दर्शनं शुद्ध) सम्यग्दर्शन को शुद्ध (करोति) करती है (च) और (नियमेन) नियमसार से (वरं निश्चयचारित्र) श्रेष्ठ निश्चय चारित्र (वर्धते) बढ़ता है ।

पंचास्तिकायशास्त्रेण सत्स्वरूपं निरूप्यते ।
पाहुडभक्त्यनुप्रेक्षाः शिवपंथोपदेशकाः ।।५।।

(पंचास्तिकायशास्त्रेण) पंचास्तिकायशास्त्र के द्वारा (सत्स्वरूपं) सत्स्वरुप को (निरूप्यते) निरूपित किया जाता है और (पाहुडभक्त्यनुप्रेक्षाः) अष्ट पाहुड, प्राकृत भक्ति और द्वादश अनुप्रेक्षाएँ (शिवपंथोपदेशकाः) मोक्षमार्ग के उपदेशक है ।

व्रतगुप्तिसमित्युच्चैः शैलं ध्याने प्रतिष्ठितं ।
महागुणाब्धिगंभीरं मुक्तिलक्ष्मीपरायणं ।।६।।
वंदे संवेगसंयुक्तं रागद्वेषपरामुखं ।
श्रमणोत्तमनिर्ग्रंथं मोहग्रंथिं कुरु क्षयं ।।७।।

(व्रतगुप्तिसमित्युच्चैः शैलं) जो व्रत, गुप्ति और समिति के पर्वत हैं, (ध्याने प्रतिष्ठितं) ध्यान में प्रतिष्ठित हैं, (महागुणाब्धिगंभीरं) महान् गुणों के गंभीर सागर हैं, (मुक्तिलक्ष्मीपरायणं) मुक्तिलक्ष्मी हेतु तत्पर हैं, (संवेगसंयुक्तं) संवेग से युक्त हैं, (रागद्वेषपराङ्मुखं) राग-द्वेष से विमुख हैं । और (श्रमणोत्तमनिर्ग्रंथं) निर्ग्रन्थ श्रमणोत्तम हैं, उन्हें (वन्दे) मैं वंदन करता हूँ, वे (मोहग्रंथि) मेरी मोह ग्रंथि को (क्षयं कुरु) क्षय करे ।

स्वस्ति श्रीकुंदकुंदाय, स्वस्ति रत्नत्रयाय च ।
मज्जन्त्युच्चै रसे शांते यत्प्रसादेनमानवाः ।।८।।

(यत्प्रसादेन) जिनके प्रसाद से (मानवाः) मनुष्य (शांते रसे) शांत-रस में (उच्चैः मज्जन्ति) अत्यंत मग्न होते हैं ऐसे (श्री कुंदकुंदाय स्वस्ति च) श्री कुन्दकुन्द जयवंत हो और (रत्नत्रयाय स्वस्ति) रत्नत्रय जयवंत हो ।

2. आचार्य श्री कनकनंदी अष्टक

(अनुष्टुप छंद)

ज्ञायकत्वेन विज्ञानं वैज्ञानिक विलक्षणं ।
साक्षान्निस्पृहमूर्तिञ्च वंदे कनकनन्दिनं ।।१।।

वीतराग विज्ञान को जानने वाले होने से जो वैज्ञानिक हैं, विलक्षण हैं और साक्षात् निस्पृहता की मूर्ति हैं ऐसे आचार्य श्रीकनकनंदी को मैं वंदन करता हूँ ।

अपूर्वमोक्षमार्गस्य साधकत्वेन साधवः ।
नायकत्वेन तेषां यः आचार्यं प्रणमाम्यहं ।।२।।

अपूर्व मोक्षमार्ग के साधक होने से जो साधुगण हैं, उन साधुओं के नायक होने से जो आचार्य हैं उन आचार्य को मैं प्रणाम करता हूँ ।

ज्ञानप्रियं दयाधीशं न्यायप्रियं क्षमार्णवं ।
ध्यानप्रियं गुणाधीशं त्यागप्रियं नमाम्यहं ।।३।।

ज्ञानप्रिय, न्यायप्रिय, ध्यानप्रिय, त्यागप्रिय, दयाधीश, गुणाधीश और क्षमा के सागर (आचार्यश्री) को मैं नमस्कार करता हूँ ।

धारकत्वेन सुज्ञानगंगां गंगाधरो यतिः ।
यः स कनकनंदी च स्वात्मस्वर्णेन नन्दति ॥४॥

उत्तम ज्ञान गंगा को धारण करने वाले होने से जो गंगाधर हैं, यति हैं और जो आत्मरूपी स्वर्ण से आनंदित होते हैं वह कनकनंदी हैं ।

चतुःशताधिकानाञ्च श्रुताकाशस्य भास्करं ।
गीतांजल्यादि शास्त्राणां कर्तारं प्रणमाम्यहं ॥५॥

जो श्रुतरूपी आकाश के भास्कर हैं तथा गीतांजली (गद्य-पद्यात्मक शास्त्र) आदि चार सौ से अधिक शास्त्रों के रचयिता हैं उन्हें मैं प्रणाम करता हूँ ।

प्रभेदं यः स जानाति तीक्ष्णज्ञानात्परात्मनोः ।
धर्माचार्योऽस्तु नो नित्यमाराध्यश्चोपदेशकः ॥६॥

जो अपने तीक्ष्ण ज्ञान से स्व और पर के भेद को जानते हैं वह धर्माचार्य कनकनंदी हमारे आराध्य और उपदेशक हो।

यो निराडम्बरः पंथनिरपेक्षः शुभंकरः ।
प्रकृतिप्रिय आचार्यो जयतु कुन्थुनंदनः ॥७॥

जो आडम्बरों से रहित है, पंथ-मतादि से ऊपर उठे हुए है, मंगलकारी है, प्रकृति प्रेमी है ऐसे श्रीकुन्थुसागरजी के शिष्य आचार्यश्री कनकनंदी जयवंत हो ।

ज्ञातुं यथा नभस्यान्तं कश्चिदपि न शक्यते ।
रत्नानां वा प्रमेयानां गुणानां भवतस्तथा ।।८।।

जिस प्रकार आकाश के अंत को जानने में कोई भी समर्थ नहीं है उसी प्रकार अपरिमित रत्नों के सदृश आपके गुणों के अंत को जानने में कोई भी समर्थ नहीं है ।

3. आचार्य श्री सुनीलसागराष्टक

(अनुष्टुप छंद)

दर्शनं यस्य वैराग्यवर्धकमघनाशकं ।
प्रशांतिदायकं चाहं वन्दे सुनीलसागरं ।।१।।

जिनका दर्शन वैराग्यवर्धक, पापनाशक और शांति प्रदायक है ऐसे आचार्य श्रीसुनीलसागर को मैं वंदन करता हूँ ।

तत्त्वज्ञं निर्मदाचार्यमात्मज्ञं निस्पृहात्मकं ।
धर्मज्ञं निर्मलात्मानं मर्मज्ञं प्रणमाम्यहं ।।२।।

जो तत्त्वों के ज्ञाता हैं, आठ मद से रहित हैं, आत्मा को जानने वाले हैं, निस्पृह हैं, धर्म को जानने वाले हैं, मर्म को जानने वाले हैं, ऐसे निर्मल चित्त वाले आचार्य को मैं प्रणाम करता हूँ ।

ज्योतिप्रदीपकत्वेन संदीपो ज्ञानभास्करः ।
नीलार्णवेवगम्भीरत्वेन सुनीलसागरः ।।३।।

आत्मज्योति को सम्यक् प्रकार से प्रदीप्त करने वाले होने से संदीप हैं, ज्ञानदिवाकर हैं और गहरे नीले समुद्र की भाँति गंभीर होने से सुनीलसागर हैं ।

अर्थाचारादि संयुक्तं महाव्रतादिसंयुतं ।
निश्शंकादिगुणोपेतं वंदे तपोग्रसाधकं ।।४।।

अर्थाचारादि सम्यग्ज्ञान के अंगों से संयुक्त हैं, महाव्रतादि सम्यक् चारित्र से युक्त हैं, निश्शंकादि सम्यक्त्व के गुणों से सहित हैं, और उग्र तप साधने वाले हैं, उन्हें वंदन करता हूँ ।

अध्यात्मभावनासारौ वा स्तुतिनीतिसंग्रहौ ।
आत्मोदयादि पद्यानां कर्तारं प्रणमाम्यहं ।।५।।

अध्यात्मसार (अज्झप्पसारो) व भावनासार (भावणासारो),

स्तुतिसंग्रह (थूदी संगहो) व नीतिसंग्रह (णीदि संगहो) और आत्मोदय आदि अनेक पद्यों के रचयिता हैं उन्हें मैं प्रणाम करता हूँ ।

सिद्धांतज्ञं कविश्रेष्ठं प्राकृताचार्यमच्युतं ।
विद्यावाचस्पतिं सौम्यं वंदे सन्मतिनन्दनं ।।६।।

सिद्धांत के ज्ञाता, श्रेष्ठ कवि, प्राकृताचार्य, विद्यावाचस्पति, सौम्यस्वभावी, अचल (व्रतों में दृढ) ऐसे महान् सन्मति गुरु के शिष्य को वंदन करता हूँ ।

भागचंदात्मजो धीरो मौनप्रियो जितेन्द्रियः
मूलोत्तरगुणाढ्यश्च जीयात्सुनीलसागरः ।।७।।

श्रीभागचंदजी के आत्मज ,धीर, मौनप्रिय, जितेन्द्रिय और मूल तथा उत्तर गुणों से पूर्ण आचार्य श्रीसुनीलसागर जयवंत हो।

कृतं शब्दैरिदंस्तोत्रं त्रियोगेन स्मराम्यहं ।
भक्त्यां चित्तं तवाप्लाव्य गुणग्रामं समग्रतः ।।८।।

यह स्तोत्र शब्दों के द्वारा किया गया है; मैं तो त्रियोगपूर्वक भक्ति में चित्त को पूरी तरह से डूबोकर आपके गुणसमूह को स्मरण करता हूँ । अर्थात् भाव अपने आप ही भक्तिवशात् शब्दरूप में अंकित हो गये हैं ।

4. श्रीमद् राजचंद्राष्टक

(उपजाति छंद)

ज्ञानावतारं समभावमूर्तिं दयावतारं परमार्थमूर्तिं ।
कृपालुदेवं सहजात्मरूपं वन्दे सदाहं गुरुराजचंद्रं ।।१।।

ज्ञान के अवतार, दया के अवतार, समतामूर्ति, परमार्थमूर्ति, कृपालुदेव और सहजात्म स्वरूप गुरु राजचंद्र को मैं नित्य वंदन करता हूँ ।

कलानिधानं नयनाभिरामं क्षमानिधानं हृदयाभिरामं ।
आनंदकंदं सहजात्मरूपं वन्दे सदाहं गुरुराजचंद्रं ।।२।।

समस्त कलाओं के खजाने, क्षमानिधान, नयनाभिराम, हृदयाभिराम, आनंदकंद और सहजात्म स्वरूप गुरु राजचंद्र को मैं नित्य वंदन करता हूँ ।

प्रयोगवीरं कविरायचंदं सरस्वतीपुत्रमुदात्तचित्तं ।
देवात्मजं तं सहजात्मरूपं वन्दे सदाहं गुरुराजचंद्रं ।।३।।

अवधान (प्रयोग) करने में पारंगत, कवि रायचंद, सरस्वती पुत्र, उदात्त चित्त, देवा माँ के पुत्र ऐसे सहजात्म स्वरूप गुरु राजचंद्र को मैं नित्य वंदन करता हूँ ।

पत्राण्यपूर्वावसरोऽमरा वा निजात्मशुद्ध्यै हि कृतात्मसिद्धिः।
यस्योपहाराः सहजात्मरूपं वन्दे सदाहं गुरुराजचंद्रं ।।४।।

अपने आत्मा की शुद्धि के लिए ही रची गयी आत्मसिद्धि, अपूर्व अवसर और साधर्मियों को लिखे गए पत्र (वचनामृत) जिसके अमर उपहार हैं ऐसे सहजात्म स्वरूप गुरु राजचंद्र को मैं नित्य वंदन करता हूँ ।

मोक्षस्य सूत्राणि व मोक्षमाला यद्भावबोधश्च हि पुष्पमाला ।
सुशब्दसिंधुं सहजात्मरूपं वन्दे सदाहं गुरुराजचंद्रं ।।५।।

जो भावनाबोध, पुष्पमाला और मोक्षमाला (रचनाएँ) हैं वे वास्तव में मोक्ष के सूत्र सदृश हैं ऐसे श्रेष्ठ शब्दसिंधु और सहजात्म स्वरूप गुरु श्रीराजचंद्र को मैं नित्य वंदन करता हूँ।

स्याद्वादचिह्नेन सुसंस्कृतैः स्वसंशोधनः स्याद्वचनैर्हि यस्य ।
ज्ञानार्णवं तं सहजात्मरूपं वन्दे सदाहं गुरुराजचंद्रं ।।६।।

स्याद्वाद-चिह्न से सुसंस्कृत जिसके वचनों से आत्मा का सम्यक् प्रकार से शोधन होता है ऐसे ज्ञान के सागर और सहजात्म स्वरूप गुरु राजचंद्र को मैं नित्य वंदन करता हूँ ।

अध्यात्ममूर्तिं च विरागमूर्तिं वात्सल्यमूर्तिं च सुशांतमूर्ति ।
स्वरूपगुप्तं सहजात्मरूपं वन्दे सदाहं गुरुराजचंद्रं ।।७।।

अध्यात्ममूर्ति, विरागमूर्ति, वात्सल्यमूर्ति, सुशांतमूर्ति और अपने में ही गुप्त सहजात्म स्वरूप गुरु राजचंद्र को मैं नित्य वंदन करता हूँ ।

वीराधिवीरो जयतु स्वनिष्ठे जयन्त्वनंतायतयश्च सर्वे ।
श्रीराजचन्द्रो जयतु स्वलीनो जयत्वनंतं जिनशासनं तं ।।८।।

आत्मनिष्ठ वीरों के वीर श्री भगवान महावीर जयवंत हो, आत्मलीन सभी अनंत साधु जयवंत हो, ऐसा अंत रहित जिनेन्द्र का शासन जयवंत हो और आत्ममग्न श्रीराजचंद्र जयवंत हो ।

5. श्री आत्मानंदाष्टक

(अनुष्टुप छंद)

यस्य स्मरणमात्रेण भावानंदः प्रजायते ।
मुकुंदं सुंदरानंदमात्मानंदं नमामि तं ।।१।।

जिसके स्मरण मात्र से भावों में आनंद उत्पन्न होता है ऐसे श्रेष्ठ-सुंदर आनंद स्वरूप मुकुंद आत्मानंद को नमस्कार करता हूँ ।

यस्य कृपाप्रसादेन स्वात्मज्योतिः प्रकाशते ।
चित्तमध्ये प्रतिष्ठार्थमात्मानंद नमामि तं ।।२।।

जिनके कृपा प्रसाद से निजात्म ज्योति प्रकाशित होती है, उसे चित्त में प्रतिष्ठित करने हेतु आत्मानंद को नमस्कार करता हूँ ।

अहमात्मा स्वभावेन नाहं देहो न पुद्गलः ।
दिव्यसूत्रं प्रदातारमात्मानंदं नमामि तं ।।३।।

स्वभाव से " मैं आत्मा हूँ" शरीर नहीं और नहीं पुद्गल हूँ, ऐसे दिव्य सूत्र को देने वाले आत्मानन्द को मैं नमस्कार करता हूँ ।

सर्वपूज्यपदार्थानां धर्मीणामस्मि सेवकः ।
दिव्यसूत्रं प्रदातारमात्मानंदं नमामि तं ।।४।।

सर्व पूज्य पदार्थों का, धर्मी जीवों का " मैं सेवक हूँ", ऐसे दिव्य सूत्र को देने वाले आत्मानन्द को मैं नमस्कार करता हूँ।

मित्रमहं हि सर्वेषां, कश्चिन्नास्ति रिपुर्मम ।
दिव्यसूत्रं प्रदातारमात्मानंदं नमामि तं ।।५।।

मैं सभी का मित्र हूँ, निश्चय से मेरा कोई शत्रु नहीं है, ऐसे दिव्य सूत्र को देने वाले आत्मानन्द को मैं नमस्कार करता हूँ।

सुज्ञं वात्सल्यसंपन्नं प्राज्ञं विनयसंयुतं ।
कृतज्ञमार्जवोपेतमात्मानंद नमामि तं ।।६।।

जो सुज्ञ, वात्सल्य संपन्न, प्राज्ञ, विनययुक्त, कृतज्ञ और आर्जव सहित हैं, ऐसे आत्मानन्द को मैं नमस्कार करता हूँ ।

विशालदृष्टिसंयुक्तमाप्तपंथे दृढ़स्थितम् ।
प्रसन्नवदनं शान्तमात्मानंद नमामि तं ।।७।।

जो विशालदृष्टि से युक्त हैं, आप्तपंथ पर दृढ स्थित हैं, प्रसन्न मुख वाले हैं और शांत है, ऐसे आत्मानन्द को मैं नमस्कार करता हूँ ।

आराध्यति त्रियोगेन यो सद्भावेन वानिशं ।
आत्मानंदमुपैत्याशु स्वात्मानंद मनोरथं ।।८।।

जो तीनों योगों से सद्भावपूर्वक आत्मानंद को निरंतर आराधता है वह शीघ्र ही अपने मनोरथ आत्मानंद को प्राप्त करता है ।

"હું આત્મા છું.
આત્માનો સાધક છું,
સૌનો મિત્ર છું."

આત્માનંદ

श्रीमद् राजचंद्र आध्यात्मिक साधना केन्द्र

(श्री सत्श्रुत सेवा साधना केन्द्र संचालित)

कोबा - 382 007. (जि. गाँधीनगर, गुजरात)

मो. : 79232 76219 / 483 / 484

E-mail : mail@shrimadkoba.org

Website : www.shrimadkoba.org